Chap-6

षष्ठ अध्याय

स्वर लि पि याँ

विभिन्न राग रागिनियाँ तथा तालों
में निबद्ध निराला जी के
प्रमुख गीत

-:: स्वर लिपियाँ ::-

प्रस्तुत अध्याय में हम निराला जी के गीतों की शास्त्रीय संगीतात्मक संरचना का विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं। महाकवि निराला जी ने वीणा वादिनी सरस्वती की वन्दना में अनेक गीत लिखे हैं। "वर दे वीणा वादिनी"[१] महाकवि का ऐसा ही एक सुप्रसिद्ध गीत है। इस वन्दना गीत को मैंने "यमन-कल्याण" में तथा ताल "त्रिताल" में निबद्ध किया है। यह राग "कल्याण" थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। "त्रिताल" ताल में कुल सोलह मात्रायें होती हैं इसमें चार भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें विभाजित होती हैं।

हमारे यहां प्रत्येक मंगल कार्य का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना से किया जाता है तथा उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत का प्रारम्भ भी राग "यमन कल्याण" से ही माना गया है इसलिये मैंने भी इस गीत को 'यमन कल्याण' में ही निबद्ध किया है जिसकी स्वरलिपि निम्नलिखित है।

(राग यमन कल्याण)　　　　　　(ताल - त्रिताल)

स्थाई

मं ध धनि सा	नि - प -	रे ग नि सा	ग रे ग -
व र देऽ ऽ	वी ऽ णा ऽ	वा ऽ दि नी	व र दे ऽ
२	०	३	×
ग ग मं रे	- ग मं ध	सां सां सां सां	- रें सां सां
प्रि य स्व तं	ऽ त्र न व	अ मृ त मं	ऽ त्र न व
०	३	×	२
नि रें गं रें	सां - प प	धनि सां - -	ग रे सा -
भा ऽ र त	में ऽ भ र	देऽ ऽ ऽऽ ऽ	व र दे ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग - मं रे	रे ग मं ध	सां - सां सां	सां रें सां सां
का ऽ ट अं	ऽ ध उ र	के ऽ बं ऽ	ध न स्त र
०	३	×	२
नि नि नि नि	नि नि नि नि	नि ध नि सां	नि धनि मं प
ब हा ऽ ज	न नि ज्यों ऽ	तिं ऽ म य	नि ऽऽ फं र
०	३	×	२
मं ध नि मं	- ध प प	नि ध नि मं	- ध प प
क लु ष भै	ऽ द त म	ह र प्र का	ऽ श भ र
०	३		२
मं ध नि सां	नि धनि मं प	धनि सां - -	ग रे सा -
ज ग म ग	ज गऽ क र	देऽ ऽ ऽ ऽ	व र दे
०	३	×	२

अन्तरा

ग	-	मं	रे	ग	ग	मं	ध	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	सां
न	व	ग	ति	न	व	ल	य	ता	ऽ	ल	छं	ऽ	द	न	व
०				३				x				२			
नि	नि	नि	नि	-	नि	नि	नि	नि	ध	नि	सां	निध	नि	मं	प
न	व	ल	कं	ऽ	ठ	न	व	ज	ल	द	मं	ऽऽ	द	र	व
०				३				x				२			
मं	ध	नि	ध	मं	ध	प	प	नि	ध	नि	मं	-	ध	प	प
न	व	यु	ग	के	ऽ	न	व	वि	ह	ग	वृ	ऽ	न्द	कों	ऽ
०				३				x				२			
मं	ध	नि	सां	नि	धनि	मं	प	धनि	सां	-	-	ग	रे	सा	-
न	व	प	र	न	वऽ	स्व	र	देऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	र	दे	ऽ
०				३				x				२			

इसी प्रकार निराला जी की दूसरी कविता "वीणा वादिनी"[2] तथा "भारति जय विजय करे"[3] नामक सुप्रसिद्ध कविताओं को भी इसी राग में निबद्ध किया जा सकता है। जिन कविताओं में कवि भारत मां के प्रति, सरस्वती देवी के प्रति, अपने देश को खुशियों से भर देने के लिये प्रार्थना करता है। उन समस्त कविताओं को इस राग में निबद्ध किया जा सकता है।

२- "सखि वसन्त आया"[4]

(राग - वसन्त) (ताल - दादरा)

स्थाई

मं	धुसां	नि	प	-	मंग	मं	-	धु	रें	सां	-
स	खि	व	सं	ऽ	तऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ
x			०			x			०		
नि	सां	-	नि	धु	प	मं	ग	मं	ग	रे	सा
भ	रा	ऽ	ह	ऽ	र्षं	ब	न	के	ऽ	म	न
x			०			x			०		

सा ग - मे - ध रें - - सा - -
न बौ ऽ, त्क ऽ र्षी, कृा ऽ ऽ, या ऽ ऽ
x 0 x 0

अन्तरा

ग- ग मे मे मे ध सांसां सां सां सारें सां -
किस ल य, व स ना, नव व य, लति का ऽ
0 0

सां सां सांसां सां सां सां- नि नि ध- नि नि नि
मि लि मऽ, धु र प्रिय, उ र तरु, प ति का,
x 0 x 0

नि नि रें गं - गं मं - गं रें सां सां
म धु प, वृ ऽ न्द, बं ऽ दी, ऽ पि क
x 0 x 0

नि नि ध मं - ध रें - - सां - -
स्व र न, भ ऽ स, र सा ऽ, या ऽ ऽ
x 0 x 0

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत राग "वसन्त में तथा ताल दादरा में निबद्ध किया गया है। इस गीत में वसन्त ऋतु का वर्णन किया गया है, इसलिये इसे राग वसन्त में निबद्ध किया गया है। वैसे इस राग के अन्तर्गत प्राकृतिक चित्रण सम्बन्धी कवितायें आ सकती हैं। "परिमल" में दूत अलि ऋतुपति के आये"[५] गीत में वसन्त के आगमन का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार "वह चली अब अलि शिशिर समीर"[६] "रंग गई पग पग धन्य धरा"[७] "फूटे हैं आमों में बौर"[८] "आज प्रथम आयो पिक पंचम"[११] कुंज कुंज कोयल बोली है"[१०] "अलि की गूंज चली द्रुम कुंजों"[१२], लघु तटिनी - तट छाई कलियाँ", "क्या सुनाया गीत कोयल"[१३] आदि गीतों में अधिकतर वसन्त

ऋतु का सरल एवं मार्मिक वर्णन है। इन सभी गीतों को "राग बसन्त" में निबद्ध किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त "परिमल" में "बासन्ती"[14] तथा "बसन्त समीर"[15] को भी इसके अन्तर्गत लिया जा सकता है।

"राग बसन्त" पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसमें रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल होते हैं तथा मध्यम तीव्र होता है।

"इसी प्रकार ताल दादरा में कुल छः मात्रायें होती हैं। दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में तीन तीन मात्रायें होती हैं।

३ - "झूम झूम मृदु गरज गरज घन घोर"[16]

(राग - देस) (ताल त्रिताल)

स्थाई

सां - सां सां - सां नि सां प ध प म ग रे नि सां

झू ऽ म झू , ऽ म मृ दु , ग र ज ग , र ज घ न

× ० २ ३

रे - - - - - - रे रे - म म प प नि नि

घो ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ र , रा ऽ ग अ , म र अं ऽ

× ० २ ३

नि नि सां नि सां नि सां सां प सां रें - - - -

ब र में ऽ , भ र नि ज , रो ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ र

× ० २ ३

नि नि नि नि सां नि सां - सां रें सां नि ध प म प

झ र झ र , झ र नि ऽ , झ र गि रि , स र में ऽ ,

× ० २ ३

अन्तरा

म म प प प प नि नि नि - सां नि सां बि सां -

घ र म ह , त ह म ऽ , मैं र सा ऽ , ग र में ऽ

× ० २ ३

प	नि	सां	रें	रें	रें	रें	रें	रें	गं	नि	नि	सां	नि	सां	-
स	रि	त	त,	रि	त	ग	ति,	च	कि	त	प,	व	न	में	S
x				0				2				3			

नि	नि	नि	-	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	प
म	न	में	S,	वि	ज	न	ग,	ह	न	का	S,	न	न	में	S
x				0				2				3			

नि	-	नि	नि	सां	-	सां	नि	प	नि	सां	रें	-	-	रें	रें
आ	S	न	न,	आ	S	न	न,	मैं	S	S	S,	S	S	र	व
x				0				2				3			

रें	गं	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	-	नि	नि	सां	नि	सां	सां
घो	S	र	क,	ठौ	S	S	र,	रा	S	ग	अ,	म	र	अं	S
x				0				2				3			

सां	रें	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	-	-	-	-	-	म	प
ब	र	में	S,	भ	र	नि	ज,	नै	S	S	S,	S	S	र	S
x				0				2				3			

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार हैं। यह गीत " राग देस " में तथा ताल त्रिताल में निबद्ध किया गया है। "" देस नामक राग खमाज - थाट से उत्पन्न होता है। इसका गायन समय रात्री का प्रथम प्रहर होता है। "[१७] इस राग में आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद लगाया जाता है। इस राग में सभी प्रकार के गीत गाये जा सकते हैं।

इस गीत को " ताल त्रिताल " में बांधा गया है। इस ताल में सोलह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती हैं परन्तु इस गीत को गाते समय यदि इसमें अध्धा त्रिताल याने कि दो - दो मात्रायें एक मात्रा में लेकर गाई जायें तो यह गीत और भी प्रभावशाली व सुन्दर जान पड़ेगा परन्तु यह गायक की इच्छा पर निर्भर है। " बादल में आये जीवन घन "[१८] मेघ के

घन केश"[19] "अलि घिर आए घन पावस के",[20] "वर्षा",[21] "गगन मेघ छायें"[22] "तिमिर धारण मिहिर दरसो",[23] "बरसो मेरे आंगन बादल",[24] "गूंजे नभ नभ घन के गर्जन"[25] "ये बालों के बादल छाये"[26] इत्यादि गीतों को भी इसके अन्तर्गत लिया जा सकता है ।

४- "खून की होली जो खेली"[27]

(राग भिंझौटी) (ताल - केहरवा या अध्धा त्रिताल

स्थाई

ग	म	ध	प	रे	-	सा	-	ग	रे	म	-	ग	-	-	-
खू	ऽ	न	की,	हो	ऽ	ली	ऽ	जो	ऽ	खे	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				x				२			
ग	ग	ग	म	प	-	प	-	नि	-	नि	सां	ध	-	प	-
यु	व	क	ज,	नो	ऽ	की	ऽ,	है	ऽ	ऽ	ऽ,	जा	ऽ	ऽ	[illegible]
०				३				x				२			
सां	-	सां	नि	सांसां	ध	प	मं	प	मप	निधप		म	ग	-	-
पा	ऽ	या	ऽ,	है	ऽ	लो	ऽ,	गो	ऽ	मैंऽ	ऽऽऽ,	[illegible]	[illegible]	ऽ	[illegible]
०				३								२			

अन्तरा

ग - ग म प - - - नि - नि सां ध - प -
रं ऽ ग आ, ये ऽ ऽ ऽ, जै ऽ मे प, ला ऽ ऽ श
0 3 x 2

सां सां नि गां रें सां गां - नि - - सां ध - प -
कु सु म किं, ऽ शु क ऽ, के ऽ ऽ सु, हा ऽ ये ऽ
0 3 x 2

ग म ध प ध ध ध ध नि नि नि सां ध - प -
कों ऽ क न, न द के ऽ, पा ऽ ये ऽ, प्रा ऽ ऽ णा
0 3 x 2

अन्तरा

नि ध ग म प - - - - नि नि नि सां - - सां
नि क ले ऽ क्या ऽ ऽ ऽ, ऽ कों प ल, ला ऽ ऽ ल
0 3 x 2

- सां मां नि रेंसां नि सां सां - नि नि मां ध - - प
ऽ फा गु कि, आऽ ऽ ऽ ग, ऽ ज गी ऽ, है ऽ ऽ ऽ
0 3 x 2

- नि नि सां ध - प - में प मप निधप म ग - -
ऽ फा गु न, की ऽ टे ऽ, ढी ऽ ऽऽ ऽऽऽ, ना ऽ ऽ न
0 3 x 2

अन्तरा

म म म म म म ग - म म म ग प - - प
खु ल ग यी, गी ऽ तों ऽ, की ऽ है ऽ, रा ऽ ऽ ल,
0 3 x 2

ग म ध प ध ध ध ध - निध नि ध प - - -
कि र ण उ, त री ऽ है, ऽ प्राऽ ऽ त, की ऽ ऽ ऽ
० ३ × २

सां सां मां सां सां सांनि प ध सां - - - - - - सां
हा ऽ थ कु, सु मऽ व र, दा ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ न
० ३ × २

- ध नि ध प प मे प मं - - मप निधप म ग
ऽ हा थ कु, सु म व र, दा ऽ ऽ ऽ, ऽऽ ऽऽऽ ऽ न
० ३ × २

यह गीत " राग भिंभोटी " तथा ताल - केहरवा " में निबद्ध किया गया है तथा इसे त्रिताल में भी गाया जा सकता है। यह राग " खमाज थाट " से उत्पन्न होता है। इस राग में गौड़ सारंग, केदार तथा नंद तीनों का मिश्रण है। इस गीत का आखरी पद " केदार " में है। " इस राग का गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का विस्तार मंद्र व मध्य सप्तकों में विशेष रुप से रहता है। " ध़ सा रे म ग यह स्वर समुदाय राग वाचक है। "[२८] " केहरवा " ताल में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें विभाजित होती हैं।

५- " जागो फिर एक बार "[२९]

(राग - भटियार) (ताल - दादरा)

स्थाई

सा - ध - ध प प ग रे सा - सा
जा ऽ गो, ऽ फि र, ए ऽ क, बा ऽ र
× ० × ०

सा	सा	सा	म	म	म	म	म	म	म	म	ग
प्या	ऽ	ऽ,	रे	ऽ	ज,	गा	ऽ	ते,	ह	र	ऽ
×			०			×			०		
ग	-	मे	-	ध	ध	धनि	सां	सां	-	रें	सां
हा	ऽ	रे,	ऽ	स	ब,	ताऽ	ऽ	रे,	ऽ	उ	न्हें
×			०			×			०		
सां	रें	नि	ध	ध	ध	नि	ध	ध	प	प	प
अ	रु	णा,	पं	ऽ	ख,	त	रु	णा,	कि	र	णा
×			०			×			०		
म	पध	-	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	-	सा
ख	डीऽ	ऽ,	खो	ऽ	ल,	ती	ऽ	है,	द्वा	ऽ	र
×			०			×			०		

अन्तरा

ग	-	मे	-	ध	ध	सां	-	सां	रें	सां	-
आँ	ऽ	खे,	ऽ	अ	लि,	यों	ऽ	ऽ,	ऽ	सी	ऽ
×			०			×			०		
सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	ध	ध	प	प
कि	स	म,	घु	कि	ग,	लि	यों	में,	फँ	सी	ऽ
×			०			×			०		
गं	-	रें	गं	-	गं	पं	गं	रें	सां	-	सां
बं	ऽ	द,	क	ऽ	र,	पाँ	ऽ	ले,	ऽ	पी	ऽ
×			०			×			०		

सां	सां	सां	रें	सां	सां	रें	नि	ध	ध	प	प
र	ही	ऽ,	है	ऽ	ऽ,	म	धु	ऽ	मौ	ऽ	न
×			0			×			0		
म	-	ध	-	ध	ध	नि	रें	नि	ध	प	प
या	ऽ	सों,	ऽ	हूँ	क,	म	ल	कों,	र	कों	में
×			0			×			0		
म	-	पध	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	-	सा
बं	ऽ	दुऽ,	हो	ऽ	र,	हा	ऽ	गु,	जा	ऽ	र
×			0			×			0		

अन्तरा

सा	-	म	-	म	म	म	म	-	म॑	म	ग
ब	ऽ	स्ता,	ऽ	च	ल,	ढ	ले	ऽ,	र	वि	ऽ
×			0						0		
म	म	ध	ध	ध	ध	नि	रें	नि	ध	प	-
श	शी	क,	बि	ऽ	वि,	भा	ऽ	व,	रीं	में	ऽ
×			0			×			0		
ग	-	म॑	म॑	ध	ध	सां	-	सां	रें	सां	सां
चि	ऽ	त्रि,	त	हु	हूँ,	है	ऽ	ऽ,	दे	ऽ	ख
×			0			×			0		
सां	-	सां	सां	सां	सां	रें	नि	ध	ध	प	-
या	ऽ	मि,	नी	ऽ	गं,	धा	ऽ	ऽ,	ज	गी	ऽ
×			0			×			0		

गं	-	रें̱	गं	गं	गं	पं	गं	रें̱	सां	-	सां
ह	ऽ	क ,	ट	क	च ,	कौ	ऽ	र ,	कौ	ऽ	र
x			0			x			0		
सां	-	रें̱	-	सां	-	रें̱	नि	ध	प	-	प
आ	ऽ	शा ,	ऽ	ओ	ऽ ,	भ	रै	ऽ ,	मौ	ऽ	न
x			0			x			0		
म	-	ध	-	ध	ध	ध	-	म	ध	प	-
भा	ऽ	वा ,	ऽ	ब	हु ,	भा	ऽ	व ,	भ	हैं	ऽ
x			0			x			0		
रें̱	रें̱	रें̱	रें̱	रें̱	रें̱	रें̱	गं	रें̱	रें̱	सां	-
धे	ऽ	र ,	र	हा	वे ,	हु	कौ	आ ,	व	से	ऽ
x			0			x			0		
सां	-	सां	सां	सां	सां	रें̱	नि	ध	ध	प	प
शि	शि	र ,	भा	ऽ	र ,	व्या	ऽ	कु ,	ल	कु	ल
x			0			x			0		
सां	-	सां	सां	सां	सां	रें̱	नि	ध	ध	प	प
खु	ले	ऽ ,	फू	ऽ	ल ,	भु	के	ऽ ,	छु	र	ऽ
x			0			x			0		
सां	-	सां	सां	सां	सां	रें̱	नि	ध	ध	प	प
आ	ऽ	या ,	ऽ	क	लि ,	यों	ऽ	में ,	म	धु	र
x			0						0		

म	पधु	ध	ध	ध	प	प	ग	रे	सा	-	सा
म	दऽ	उ ,	र	यौ	ऽ ,	व	न	उ ,	भा	ऽ	र
×			०			×			०		

बाकी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत राग "भटियार" तथा ताल "दादरा" में निबद्ध किया गया है। "भटियार" राग "मारवा" थाट से उत्पन्न होता है इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है। इसका गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। ताल "दादरा" में छः मात्रा तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में तीन - तीन मात्रायें होती हैं। इस राग के अन्तर्गत जो कवितायें श्रृंगार - रस से ओतप्रोत हैं, गायी जा सकती हैं जैसे "असरण सर वरण गान"[30] "दृगों की कलियां नवल खुली"[31], "अपने सुख स्वप्न से खिली वृन्त की कली"[32], "रंग गई पग पग धन्य धरा"[33], "तुम्हारे सुन्दरि कर सुन्दर"[34] "रंग भरी किस अंग भरी हो"[35], "गीत गाये हैं मधुर स्वर"[36] "मन" मधु बन आली"[37] "आओ आओ वारिद वन्दन"[38] "बरसो सुख बरसो आनन्दघन" इत्यादि।

६-- "अशरण शरण राम"[39]

(राग - रागेश्री) (ताल - झपताल)

स्थाई

ग	ग	ग	म	रे	रे	नि	सा	-	सा
अ	श ,	र	ण	श ,	र	ण ,	रा	ऽ	म
×		२			०		३		
सा	-	ग	म	-	ध	म	धनि	सां	सां
का	ऽ ,	म	के	ऽ ,	छ	वि ,	धाऽ	ऽ	म
×		२			०		३		

अन्तरा

ग	ग	म	ध	–	ध	म	धनि	सां	सां
कृ	ष्णा,	मु	रलि	ऽ,	म	नो,	हॆऽ	र	स
×		२			०		३		
सां	सां	सां	सां	सां	गां	ध	म	–	ग
र	वि,	वं	ऽ	श,	अ	व,	तं	ऽ	स
×		२			०		३		
ग	–	म	ध	ध	ध	म	धनि	सां	–
क	ऽ,	मं	र	त,	नि	ऽ,	शंा	ऽ	स
×		२			०		३		
सां	–	ध	–	म	ग	म	रे	–	सा
पू	ऽ,	रॊ	ऽ	म,	न	ऽ,	श्या	ऽ	म
×		२			०		३		

अन्तरा

मप	ग	म	ध	–	ध	म	धनि	सां	सां
जाऽ	ऽ,	न	की	ऽ,	म	नो,	रऽ	ऽ	म
×		२			०		३		
ध	नि	सां	गं	गं	गं	मं	रें	–	सां
ना	ऽ,	य	क	सु,	चा	रु,	त	ऽ	म
×		२			०		३		
सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	नि	–	ध
प्रा	ऽ,	ण	के	ऽ,	स	मु,	धा	ऽ	म
×		२			०		३		

ध - नि ध म ग म रे - सा
ध ऽ, मैं धा ऽ, र ण, श्या ऽ म
x २ ० ३

यह गीत राग "रागेश्री" तथा "ताल – झपताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों निषाद लगाये जाते हैं। "इसमें पंचम स्वर तो बिल्कुल नहीं लगता और आरोह में रिषभ भी नहीं लगाया जाता। ध – म की स्वर संगति इसमें बहुत सुन्दर मालूम होती है। इसके उत्तरांग में बागेश्री का आभास होता है किन्तु पूर्वांग में आया हुआ तीव्र गंधार बागेश्री का भ्रम हटा देता है क्योंकि बागेश्री में कोमल गंधार लगता है।"[40] इस राग का गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। "ताल-झपताल" में कुल दस मात्रायें तथा चार भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

प्राय: भक्ति प्रधान गीत इस राग में गाये जा सकते हैं जैसे "राम के हुए तो बने सारे काम"[41], "कृष्ण – कृष्ण राम राम"[42], "मेरी सेवा ग्रहण करो हे"[43], "हरि भजन करो भू भार हरो"[44] "रहते दिन तीन शरण भज लें"[45], "लो रूप लो नाम"[46], "बांसुरी जो बजी"[47], "मन न मिले न मिले हरि के पद"[48], "दो सदा सत्संग मुझको"[49], "हरि का मन से गुणगान करो"[50], "काम के छवि धाम"[51], "डमड डम डमड डम"[52], "शंकर शुभंकर हुए जो न तो क्या"[53], "सार्थक करो प्राण"[54], तथा "प्रार्थना"[55] इत्यादि।

७– "वरद हुई शारदा जी हमारी"[56]

(राग बहार) (ताल – त्रिताल)

स्थाई

नि सां नि प म प ग म नि ध - नि - - सां -
व र द हु, ई ऽ शा ऽ, र दा ऽ जी, ह मा री ऽ
० ३ x २

नि सां नि प (प) - ग म प - गुम रे - रे सा -
प ह नी व , स ऽ न्त कि , मा ऽ लाऽ सां , ऽ व री ऽ
० ३ × २

अन्तरा

ग म नि ध नि - सां नि सां - नि - सां - सां -
लो ऽ क वि , लो ऽ क हु , ये ऽ आँ ऽ , खो ऽ से ऽ
० ३ × २

नि नि सां सां रें रें सां सां नि - सां - (सां) - नि ध
उ म ड़े ग , ग न ला ऽ , खो ऽ पं ऽ , खो ऽ से ऽ
० ३ × २

गं - गं मं रें - सां सां नि - सां सां (सां) - नि ध
को ऽ य ल , मं ऽ ज री , कौ ऽ शा ऽ , खो ऽ से ऽ
० ३ × २

नि - प प म प ग म नि ध नि नि नि नि सां -
गा ऽ हूँ सु , मं ऽ ग ल , हों ऽ री तु , म्हा ऽ री ऽ
० ३ × २

अन्तरा

ग म नि ध नि नि सां - सां - सां - नि नि सां -
ना ऽ चे म , यू र प्रा ऽ , त ऽ के ऽ , फू ऽ टे ऽ
० ३ × २

नि सां रें रें रे - सां सां नि - सां सां (सां) - नि ध
पा ऽ त के , मे ऽ घ त , ले ऽ सु ख , लू ऽ टे ऽ
० ३ × २

गं	-	गं	मं	रें	-	सां	सां	नि	-	सां	सां	(सां)	-	नि	ध
का	ऽ	मि	नी,	के	ऽ	म	न,	मू	ऽ	ठ	से,	कू	ऽ	टे	ऽ
०				३				×				२			

नि	प	प	प	म	प	ग	म	नि	ध	वि	नि	सां	-	सां	-
मि	ल	न	खि,	ल	न	की	ऽ,	का	ल	कि	नी,	बा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

यह गीत राग " बहार " तथा ताल " त्रिताल " में निबद्ध किया गया है। यह राग " काफी " थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें गंधार कोमल तथा दोनों निषादों का प्रयोग किया जाता है। इसका गायन समय मध्य रात्रि माना गया है किन्तु वसन्त ऋतु में यह राग चाहे जिस समय गाया जा सकता है।

" ताल त्रिताल " में कुल सोलह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती हैं। इस गीत में भी वसन्त ऋतु का ही वर्णन किया गया है।

८- " भजन कर हरि के चरण मन " [५७]

(राग - भैरव) (ताल - त्रिताल)

स्थाई

ध	ध	ध	प	प	-	ग	ग	म	-	म	म	रे	रे	सा	सा
भ	ज	न	क,	र	ऽ	ह	रि,	के	ऽ	ऽ	च,	र	ण	म	न
०				३				×				२			

नि	सा	ग	ग	म	-	प	-	ध	सां	नि	ध	ध	प	ग	म
पा	ऽ	र	क,	र	ऽ	मा	ऽ,	या	ऽ	ऽ	च,	र	ण	म	न
०				३				×				२			

अन्तरा

सां	नि	ध	प	प	-	ग	म	ध	ध	-	-	नि	-	सा	-
क	लु	णा	के,	क	र	से	ऽ,	गि	रे	ऽ	ऽ,	हैं	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
ध	ध	ध	सां	-	सां	सां	-	रें	-	सां	सां	नि	सां	ध	प
दे	ऽ	ह	कु,	ऽ	म	ते	ऽ,	रे	ऽ	ऽ	फि,	रे	ऽ	हैं	ऽ
०				३				×				२			
गं	गं	गं	सां	गं	गं	गं	-	रें	मं	गं	रें	-	-	सां	सां
वि	ष्य	य	के,	र	थ	से	ऽ,	कु	त	र	ऽ,	ऽ	ऽ	क	र
०				३								२			
सां	रें	गं	रें	सां	-	नि	ध	ध	सां	नि	ध	प	-	ग	म
ब	न	श	र,	णा	ऽ	का	ऽ,	उ	प	क	र,	णा	ऽ	म	न
०				३				×				२			

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "भैरव राग" तथा "ताल-त्रिताल" में निबद्ध किया गया है यह राग "भैरव थाट" से उत्पन्न होता है इसमें रिषभ एवं धैवत कोमल होते हैं बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। यह गीत भक्ति प्रधान गीतों के अन्तर्गत ही आता है, तथा यह शान्त रस से ओतप्रोत है। "राग भैरव" भी शान्त प्रधान ही होता है तथा इसका गायन समय भी प्रात:काल ही होता है इसलिये इस राग में शान्त रस से ओतप्रोत सभी कवितायें निबद्ध की जा सकती है जैसे - "बैठ लो कुछ देर"[५८], "डोलती नाव प्रखर है धार"[५९], "एक दिन थम जायेगा रोदन"[६०], "जीवन प्रात समीरण सा लघु"[६१] "चकित, चितवन कर अन्तर पार"[६२], "प्रिय मुद्रित दृग खोलो"[६३], "सुमन भर न लिए"[६४], "हमारा डूब रहा दिनमान"[६५], "स्वप्नों सी उन किन आँखों की"[६६], "काल वायु से स्खलित न होंगे"[६७], "देख चुका जो जो आए थे"[६८], "कल्पना के कानन की रानी"[६९], "पास ही रे, हीरे की खान"[७०] इत्यादि।

६ - "खेलूंगी कभी ना होली" ७१

(राग - झिंझोटी) (ताल - केहरवा)

स्थाई

ग	रे	म	ग,	सा	-	नि़	ध	सा	-	सा	-	-	-	ग	म
खे	लूं	गी	क,	भी	ऽ	ना	ऽ,	हो	ऽ	ली	ऽ,	ऽ	ऽ	उ	स
x				0				x				0			
प	-	प	म	प	-	रे	ग	रे	ग	रेग	मप	म	ग	-	-
से	ऽ	जो	ऽ,	ऽ	ऽ	न	हीं,	ह	म	जोऽ	ऽऽ,	ली	ऽ	ऽ	ऽ
x				0				x				0			

अन्तरा

														ग	म
														य	ह
ध	-	ध	ध	ध	-	नि	ध	म	-	प	-	-	-	म	म
आँ	ऽ	ख	क,	ही	ऽ	क	कु,	बो	ऽ	ली	ऽ,	ऽ	ऽ	य	ह
x				0				x				0			
मे	मे	-	म	-	म	प	-	रे	ग	रेम	मप	म	ग	ग	मे
हु	ई	ऽ	श्या,	ऽ	म	की	ऽ,	तो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ,	ली	ऽ,	ऐ	ऽ
x				0				x				0			
ध	-	-	ध	ध	सां	नि	ध	म	-	प	-	-	-	म	-
सी	ऽ	ऽ	भी,	ऽ	र	क	ठी,	ठो	ऽ	ली	ऽ,	ऽ	ऽ	गा	ऽ
x				0				x				0			
म	-	-	म	-	-	प	-	रे	ग	रेग	मप	म	ग	-	-
हे	ऽ	रे	ऽ,	श	म	की	ऽ,	चो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ,	ली	ऽ	ऽ	ऽ
x				0				x				0			

अन्तरा

														ग	म
														अ	प
प	-	प	प	में	प	ग	म	ध	-	ध	-	-	-	ध	ध
नै	ऽ	सै	ऽ,	अ	प	ना	ऽ,	धौ	ऽ	लौ	ऽ,	ऽ	ऽ	अ	प
x				0				x				0			
ध	-	ध	ध	ध	सां	नि	ध	में	-	प	-	-	-	में	-
ना	ऽ	धुं	ऽ	घ	ट	तु	म,	खौ	ऽ	लौ	ऽ,	ऽ	ऽ	मैं	
x				0				x				0			
में	में	-	में	में	में	प	-,	रे	ग	रेग	मप,	म	ग	-	-
ब	सी	ऽ	प,	श	ऽ	ई	ऽ,	टो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ,	लो	ऽ	ऽ	ऽ
x				0				x				0			

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग झिंझोटी" तथा "ताल - केहरवा" में निबद्ध किया गया है। यह राग "खमाज - थाट" से उत्पन्न होता है इसमें निषाद कोमल होता है बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग का विस्तार मंद्र, मध्य सप्तकों में विशेष रूप से होता है। "ताल केहरवा" में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती हैं। इस प्रकार के होली गीतों को इस राग में गाने से गीत की सौन्दर्यात्मकता और भी निखर उठती है परन्तु निराला जी के काव्य में इस प्रकार के गीत अत्यल्प ही हैं।

१०- "शुभ्र शरद आई अम्बर पर" ७२

(राग - कालिंगड़ा) (ताल - त्रिताल)

स्थाई

सां	-	ध	प	प	प	ग	म	ग	म	ध	ध	नि	नि	सां	सां
शु	ऽ	भ्र	श	र	त	आ	ऽ	ई	ऽ	अं	ऽ	ब	र	प	र
०				३				×				२			
सां	सां	-	ध	-	प	ग	म	ग	-(म)	-		रे	रे	सा	-
ब	ढी	ऽ	रा	ऽ	स	क	म	लौ	ऽ	की	ऽ	स	र	स	र
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	रें	सां	रें	नि	नि	सां	-
ह	र	सिं	गा	ऽ	र	की	ऽ	फू	ऽ	ल	प्रा	ऽ	त	की	ऽ
०				३				×				२			
सां	गं	गं	मं	रें	रें	सां	-	नि	सां	-	ध	सां	नि	ध	प
बि	खे	ऽ	र	ऽ	श्मि	से	ऽ	ल	जी	ऽ	गा	ऽ	त	कौ	ऽ
०				३				×				२			
सां	-	ध	प	-	प	म	ग	म	ग	म	ग	रे	रे	सा	-
शी	ऽ	तों	हो	ऽ	च	ली	ऽ	न	दि	यॉं	ऽ	झ	र	ने	ऽ
०				३				×				२			
सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	रें	सां	-	नि	सां	ध	प
ब	द	ले	ऽ	वे	ऽ	रा	ज	नी	ऽ	ले	ऽ	घ	र	घ	र
०				३				×				२			

बाकी अन्तरे सभी इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग कालिंगड़ा" में तथा "ताल त्रिताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग "भैरव थाट" से उत्पन्न हुआ है इसमें रिषभ व धैवत स्वर कोमल होते हैं। "कालिंगड़ा" राग गाते समय

रे॒ ध॒ स्वरों पर आंदोलन अधिक देने से भैरव की झलक आने लगती है इसका गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। "ताल त्रिताल" में सोलह मात्रायें होती हैं इसमें चार भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार - चार मात्रायें होती हैं। इस गीत में शरद ऋतु का वर्णन किया गया है। "शरद की शुभ्र गंध फैली" [७३] गीत भी इसके अन्तर्गत ही आता है। वैसे प्रत्येक गीत या कविता का भावार्थ निराला ही होता है इसलिये उसके भाव के अनुसार ही राग का चयन किया जाता है।

११- "दुःख भी सुख का बन्धु बना" [७४]

(राग - शिवरंजनी) (ताल - त्रिताल)

स्थाई

सा	रे	ग॒	प	प	ध	प	-	ध	प	ग॒	रे	रे	-	ग॒रे	सा
दुः	ख	भी	ऽ,	सु	ख	का	ऽ	बं	ऽ	न्धु	ब,	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

सा	रे	ग॒	प	ध	सां	ध	प	ग॒	-	सा	ग॒	रे	-	ग॒रे	सा
प	ह	लै	कि,	ब	द	ली	ऽ,	है	ऽ	र	च,	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	प	प	ध	ध	ध	प	-	प	प	प	ध	ध	ध	प	-
प	र	म	प्रे,	ऽ	य	भी	ऽ,	आ	ऽ	ज	श्रे,	ऽ	य	सी	ऽ
×				२				०				३			

प	-	धसां	ध	सां	-	सां	सां	ध	-	गं॒	गं॒रें	सांरें	सां	सां	-
भी	ऽ	तोऽ	अ,	चा	ऽ	न	क,	गी	ऽ	ती	गेऽ,	ऽऽ	य	सी	ऽ
×				२				०				३			

सां	-	रें	सां	ध	-	प	-	ध	सां	रें	ध	ध	ध	प	-
है	ऽ	य	हु,	ईं	ऽ	ज्यों	ऽ,	उ	पा	ऽ	दे,	ऽ	य	थी	ऽ
x				२				०				३			

ध	सां	ध	प	ग	ग	रे	-	ग	रे	सा	ध़	सा	-	-	-
क	ठि	न	क,	म	ल	को	ऽ,	म	ल	व	च,	ना	ऽ	ऽ	ऽ
x				२				०				३			

अन्तरा

प	-	धसां	ध	सां	सां	सां	सां	प	-	धसां	ध	सा	-	सा	सा
उं	ऽ	चाऽ	ऽ,	स्व	र	नी	ऽ,	चे	ऽ	आऽ	ऽ,	या	ऽ	है	ऽ
x				२				०				३			

ध	ध	गं	रें	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	ध	सां	-	सां	सां
त	रु	के	ऽ,	त	ल	फै	ऽ,	ली	ऽ	छा	ऽ,	या	ऽ	है	ऽ
x				२				०				३			

गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं	गं	गं	रें	सां	ध	ध	ग	रे	-
उ	प	र	ऽ,	उ	प	व	न,	फ	ल	ला	ऽ,	या	ऽ	है	ऽ
x				२				०				३			

गं	रें	सां	-	ध	ध	प	प	प	प	ग	रे	सा	गरे	सा	-
छ	ल	से	ऽ,	छु	ट	क	र,	म	न	अ	प,	ना	ऽऽ	ऽ	ऽ
x				२				०				३			

इस गीत को " राग शिव रंजनी " में निबद्ध किया गया है तथा इसे " ताल त्रिताल " में बाँधा है । यह राग " काफी " थाट से उत्पन्न होता है इसमें गंधार कोमल है तथा बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं । इस पर राग " भूपाली " की छाया दिखाई देती है । " त्रिताल " ताल में सोलह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार-चार मात्रायें विभाजित होती हैं । इस गीत को गाते समय यदि " अध्धा - त्रिताल "

बजाया जाये तो यह गीत और भी सुन्दर प्रतीत होगा । इस गीत का भाव अन्य गीतों के भाव से एकदम ही निराला है । इस तरह के अन्य गीत उपलब्ध नहीं हैं ।

१२- गज़ल

" मुसीबत में कटे हैं दिन
मुसीबत में कटी हैं रातें " ७५

(राग कलावती) (ताल रूपक)

स्थाई

सा
मु

ग ग - प - प प ध ध ग प - - सा
सी ऽ ऽ , ब त , मैं क , टे ऽ हैं , दि न , ऽ , मु
× २ ३ × २ ३

ग म - प - प प ध नि प ध - - ध
मी ऽ ऽ , ब त , मैं क , टी ऽ ऽ , रा ऽ , तें , ल
× २ ३ × २ ३

नि नि ध नि - नि - प - - ध ग प नि
गी ऽ है , वाँ ऽ , ऽ द , सू ऽ ऽ , र ज , से , नि
× २ ३ × २ ३

सां सां सां सां सां सां सां नि - धप ध ध निध पग
रं ऽ ऽ , न्त र , रा ऽ , हू ऽ कीऽ धा ऽ तेंऽ ऽऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

नि- धप ग प - ध ध सां सां सां सां सां सां सां
जोऽ ऽऽ ऽ, ह ऽ, स्ती से, हु ए हैं, प ऽ, ऽ स्त
× २ ३ × २ ३

नि नि नि सां - सां गं नि नि सां ध - प -
ह म ऽ, फ़े ऽ, हैं ऽ, व ही ऽ, क्या ऽ, है ऽ
× २ ३ × २ ३

नि नि ध नि - नि - प ध ग प - प -
गु ज र, तो ऽ, जिं ऽ, द गी के, सा ऽ, ऽ थ
× २ ३ × २ ३

नि नि नि सां सां सां सां नि - धप ध ध निध पग
ह र ऽ, क त, सं ऽ, म री ऽऽ, बा ऽ, तेंऽ ऽऽ
× २ ३ × २ ३

बाकी सभी अन्तरे इसीप्रकार से हैं। निराला जी की "बेला" और "नये-पत्ते" दो काव्य संग्रह ऐसे है जिनमें निराला जी ने गज़लें लिखी हैं। यह गज़ल "बेला" नामक काव्य संग्रह से उद्धृत की गई है। यह गज़ल रूप में गीत लिखा गया है इसलिये इसे राग "कलावती" तथा "ताल रूपक" में निबद्ध किया गया है। गज़लों की यह विशेषता होती है कि इसे हमेशा "रूपक" या "दादरा", ताल में ही निबद्ध किया जाता है, अन्य किसी ताल में नहीं। "रूपक" ताल में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

राग "कलावती" खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में अनेक गज़लें निबद्ध की जा सकती हैं जैसे - "बातें चली सारी रात तुम्हारी, आँखें

नहीं खुलीं प्रात तुम्हारी "[७६], " निगाह तुम्हारी थी दिल जिसमें बेकरार हुआ "[७८], " हंसी के झूले के झूले हैं वे बहार के दिन "[७७] " अपने को दूसरा न देख - दूसरे को अपना न कह "[७६], " चढ़ी हैं आँखें जहां की उतार लायेंगी "[८०] " गिराया है जमीं होकर छुटाया आसमां होकर "[८१] इत्यादि ।

१३- " किनारा वो हमसे किये जा रहे हैं,
दिखाने को दर्शन दिये जा रहे हैं "[८२]

(राग मिश्रित बागेश्री) (ताल - रूपक)

स्थाई

ग कि

रे - - ग रे सा ध़ सा- - - सा - सा सा
ना ऽ ऽ , रा ऽ , ऽ वो , हम ऽ ऽ , से ऽ , ऽ , कि
x २ ३ x २ ३

म - - ध प नि ध ग - - रे - - ध
ये ऽ ऽ , जा ऽ , ऽ र , हे ऽ ऽ , हैं ऽ , ऽ , दि
x २ ३ x २ ३

नि - - नि - नि ध सांनि धनि - नि - नि ध
खा ऽ ऽ , ने ऽ , ऽ को , दऽ ऽऽ ऽ , र्श ऽ , न , दि
x २ ३ x २ ३

ध ध ध ध प नि ध ग - - रे - - ग
ये ऽ ऽ , जा ऽ , ऽ र , हे ऽ ऽ , हैं ऽ , ऽ , कि
x २ ३ x २ ३

अन्तरा

ध
ग

सां - - सां - सां रें नि - - ध - ध -
छे ऽ ऽ , हैं ऽ , ऽ सु , हा ऽ ऽ , गि न , के ऽ
x २ ३ x २ ३

मां - - सां - सां रें नि - - ध - ध ध
मो ऽ ऽ, ती ऽ, ऽ के, दा ऽ ऽ, ने ऽ, ऽ व
× २ ३ × २ ३

नि - - नि - ध - नि - - नि - नि ध
ही ऽ ऽ, सू ऽ, त ऽ, तो ऽ ऽ, ड़े ऽ, ऽ, लि
× २ ३ × २ ३

ध ध ध ध प नि ध ग - - रे - - ग
ये ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, हैं ऽ, ऽ कि
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

म
छि

म म म म म म म म म म म म म म
पी ऽ ऽ, चौ ऽ, ट ऽ, की ऽ ऽ, बा ऽ, ऽ त
× २ ३ × २ ३

म - - ग रे ध़ सा ध़ सा सा सा सा सा ध
पू ऽ ऽ, छी ऽ, ऽ तो, बो ऽ ऽ, ले ऽ, ऽ नि
× २ ३ × २ ३

नि - - नि - नि ध सांनि धनि - नि - नि ध
रा ऽ ऽ, शा ऽ, के ऽ ड़ोऽ ऽऽ, ऽ, रे ऽ, ऽ लि
× २ ३ × २ ३

ध ध ध ध प नि ध ग - - रे - - ध
ये ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, है ऽ, ऽ ज
× २ ३ × २ ३

सां - - सां - सां रें नि - - ध - - ध
आ ऽ ऽ, ने ऽ, ऽ कि, र ऽ ऽ, फन्ता ऽ, ऽ र
× २ ३ × २ ३

सां - - सां - सां रें नि - - ध - ध ध
मैं ऽ ऽ, कै ऽ, ऽ सा, तू ऽ ऽ, कौं ऽ, ऽ, म
× २ ३ × २ ३

नि - - नि - ध - नि - - नि - नि ध
रे ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, हैं ऽ, ऽ, जि
× २ ३ × २ ३

ध ध ध ध प नि ध ग - - रे - - म
ये ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, हैं ऽ, ऽ कि
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

ध
तु

गं - - सां - सां रें नि - - ध - - ध
ला ऽ ऽ, मैं ऽ, द बि, ज ऽ ऽ, औ ऽ, ऽ क
× २ ३ × २ ३

सां - - सां - सां रें नि - - ध - - ध
हाँ ऽ ऽ, ये ऽ, ऽ हु, ए ऽ ऽ, जो ऽ, ऽ ल
× २ ३ × २ ३

गं गं - गं गं गं रें (गं) (गं) - गं गं गं रें
हू ऽ ऽ, दू ऽ, ऽ स, रो ऽ ऽ, का ऽ, ऽ पि
× २ ३ × २ ३

रें - सां सां - सां रें नि - - ध - - ध
ये ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, हैं ऽ, ऽ पि
× २ ३ × २ ३

ध ध ध ध प नि ध ग – – रे – – ग
ये ऽ ऽ, जा ऽ, ऽ र, है ऽ ऽ, हैं ऽ, ऽ, कि
× २ ३ × २ ३

यह गज़ल राग "बागेश्री" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध की गई है। यह राग "काफी" थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गंधार व निषाद कोमल होते हैं बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। "ताल रूपक" में सात मात्रायें होती हैं तीन भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

१४- "बुझी दिल की न लगी मेरी
तो क्या तेरी बात बनी" ८२

(राग - जोगिया) (ताल - रूपक)

स्थाई (विवादी के रूप में गंधार)

सा सा रे म- - म म- मध पनि ध मग रेग रे -
बु झी ऽ, दिल ऽ, कि नल, गीऽ ऽऽ ऽ, मेंऽ ऽऽ, री ऽ
× २ ३ × २ ३

मध पनि ध म - रे - मग रेग रे सा - सा -
तोऽ ऽऽ क्या, ते ऽ, री ऽ, बाऽ तऽ ब, नी ऽ, ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

ध ध प ध - ध ध प ध ग प म म -
च ली न, को ऽ, ई च, ला ऽ ई, चा ऽ, ऽ ल
× २ ३ × २ ३

मध मनि ध म - रे - मग रेग रे सा सा सा -
तोऽ ऽऽ क्या, ते ऽ, री ऽ, बाऽ ऽऽ त, ब नी, ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

सां सां सां सां - ध - सां - - सां - सां -
भ र दी , क र , नी ऽ , से ऽ बु , री ऽ , जो ऽ
x २ ३ x २ ३

रें - रें नि - ध ध नि - ध प - - -
त री ऽ , ऽ ग , म ग , क ऽ र , दी ऽ , ऽ ऽ
x २ ३ x २ ३

सा सा रे म - म - मध प ध मग रेग रे सा
अ प ने , पू ऽ , रे ऽ , बल ऽ ऽ , पऽ रऽ , ऽ , कि
x २ ३ x २ ३

ध नि ध म - रे रे मग रेग रे रेग रे सा -
ना ऽ ऽ , रे ऽ , ना जो , तऽ इऽ र , दीऽ ऽ , ऽ ऽ
x २ ३ x २ ३

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गज़ल "राग जोगिया" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध की गई है। यह राग "भैरव - थाट" से उत्पन्न होता है। इसमें रे, ध स्वर कोमल होते हैं। "रे- म और ध- म की स्वर संगति इस राग की रंजकता बढ़ाती है। मध्यम स्वर मुक्त रखने से यह राग विशेष अच्छा लगता है। भातखण्डे जी के मतानुसार इस राग के अवरोह में किसी किसी स्थान पर कोमल निषाद लेते हुए कोमल धैवत पर आते हैं।"[८४] इसका गायन समय प्रात:काल होता है। "रूपक" ताल में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

(गज़ल)

१५- हंसी के तार के होते हैं ये बहार के दिन [८५]

(राग - नायकी कान्हड़ा) (ताल - दादरा)

स्थाई

											म
											हं
रेसा	-नि	प	सा	-	सा	सा	-	सा	रेरेगा	निसा	रे
सीऽ	केऽ	ऽ ,	ता	ऽ	र ,	के	ऽ	हो ,	तेऽऽ	ऽऽ	हैं
x			0			x			0		
रे	-	प	ग	ग	म	म	रे	-	सा	-	म
ये	ऽ	ब ,	हा	ऽ	ऽ ,	र	के	ऽ ,	दि	न	ऽ
x			0			x			0		
मम	म	म	प	-	प	प	-	प	मप	निसां	-
हृदय	के	ऽ ,	हा	ऽ	र ,	के	ऽ	हो ,	तेऽ	ऽऽ	ऽ
x			0			x			0		
प	-	प	ग	-	ग	म	रे	-	सा	-	म
हा	ऽ	ऽ ,	र	के	ऽ ,	दि	न	ऽ ,	हं	सी	ऽ
x			0			x			0		

अन्तरा

											नि
											नि
निध	म	प	प	-	प	प	-	प	धप	मप	ध
गाऽ	ह	कू ,	की	ऽ	कि ,	के	ऽ	श ,	रोऽ	ऽऽ	की
x			0			x			0		
रेसा	नि	प	सा	-	सा	सा	सा	सा	रेसा	निसा	रे
गंऽ	ऽ	ध ,	भा	ऽ	र ,	के	ऽ	हो ,	तेऽ	ऽऽ	है
x			0			x			0		

रे	-	प	ग	ग	म	म	रे	-	सा	-	म
ये	ऽ	ब,	हा	ऽ	ऽ,	र	के	ऽ,	दि	न,	हं
x			0			x			0		

दूसरा अन्तरा पहिले के समान हो है।

अन्तरा (३)

											म
											ह
नि	-	ध	धनि	सां	नि	सां	-	सांनि	सां	-	नि
व	ऽ	न,	लीऽ	ऽ	ग,	ले	ऽ	कुश,	कू	ऽ	ल,
x			0			x			0		
सां	सां	सां	नि	ध	-	ध	नि	सां	नि	-	प
गी	ऽ	की,	बै	ऽ	ऽ,	ऽऽ	ऽ	ऽ,	बो	ऽ	ले
x			0			x			0		
रेंसा	नि	प	सा	-	सा	सा	सा	सा	रेंसा	निसा	रे
सऽ	मो	र,	सा	ऽ	र,	के	हो	ते,	ऽऽ	ऽऽ	हैं
x			0			x			0		
रे	-	प	ग	ग	ग	म	रे	-	सा	-	-
ये	ऽ	ऽ,	ब	हा	र,	के	ऽ	ऽ,	दि	न	ऽ
x			0			x			0		

चौथा अन्तरा पहिले अन्तरे के समान ही है। इस गज़ल को "राग नायकी-कान्हड़ा" में तथा "ताल दादरा" में निबद्ध किया गया है। "नायकी कान्हड़ा" राग की यह विशेषता है कि इसमें "कान्हड़ा" व "बहार" दोनों का सम्मिश्रण होता है। इसके पूर्वांग में कान्हड़ा तथा उत्तरांग में बहार होता है। इस राग में गंधार व निषाद स्वर कोमल होते हैं बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। "ताल - दादरा" में छ: मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में तीन तीन मात्रायें होती

हैं। निराला जी की और अनेक गजलें इसके अन्तर्गत आ सकती हैं जैसे - " गिराया है जमीं होकर, छुटाया आसमाँ होकर "[८६] " पड़े थे नींद में उनको प्रभाकर ने जगाया है "[८७] " अगर तू डर से पीछे हट गया तो काम रहने दे "[८८] " आँख के आँसू न शोले बन गये तो क्या हुआ "[८९] " राह पर बैठे उन्हें आजाद तू जब तक न कर "[९०] " किसको तलाश में हो इतने उतावले से "[९१], " संकोच को विस्तार दिये जा रहा हूं मैं "[९२] इत्यादि।

१६- " गहन है यह अन्धकारा "[९३]

(राग मिश्रित बागेश्री) (ताल - रूपक)

स्थाई

सा ग म ध - नि ध म - गसा ध - ग -
ग ह न, है ऽ, य ह, अं ऽ न्ध, का ऽ, रा ऽ
× २ ३ × २ ३

म - ध सां - सां रें नि - ध मध नि ध ध
स्वा ऽ र्थ, के ऽ, अ व, गुं ऽ ठ, नोऽ ऽ, से ढु
× २ ३ × २ ३

सां - - निध पम म म ग - गा म - मग रेसा
आ ऽ ऽ, हैऽ ऽऽ, ऽ लु, ण्ठन ऽ ई, मा ऽ, राऽ ऽऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

ध
ख

सां - - सां - सां सां सां - - सां - सां रें
ढी ऽ ऽ, है ऽ, ऽ दी, बा ऽ र, ज ड़, को ऽ
× २ ३ × २ ३

नि धप नि ध - ध - सां - सां सां - सां सां
धे ऽऽ र, क र, ऽ ऽ, बो ऽ ल, ते ऽ, हैं ऽ
× २ ३ × २ ३

सां - सां सां - सां रें नि धप नि ध - - -
लो ऽ ग, जो ऽ, मुँ ह, फे ऽऽ र, क र, ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

नि नि ध नि नि नि - नि नि ध नि नि नि नि
इ स ग, ग न, में ऽ, न हीं है, दि न, [illegible] र
× २ ३ × २ ३

ध ध प ध ध ध ध ध प नि ध - मग रेंसा
न हीं है, श श, घ र, न हीं ऽ, ता ऽ, राऽ ऽऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

म - ध सां - सां सां सा - - सां - सां रें
क ऽ ल्प, ना ऽ, का ऽ, ही ऽ अ, पा ऽ, ऽ र
× २ ३ × २ ३

ध प नि ध - - - म - ध सां - सां सां
स मु द्र, य ह, ऽ ऽ, ग र ज, ता ऽ, है ऽ
× २ ३ × २ ३

सां - - सां - सां रें ध प नि ध - - -
धे ऽ र, क र, त तु, रं ऽ ड़, य ह, ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

नि नि ध नि नि नि - नि नि ध नि नि नि नि
कु छ न, ही ऽ, आ ऽ, ता ऽ स, म झ, में ऽ
× २ ३ × २ ३

ध	ध	प	ध	ध	ध	ध	ध	प	नि॒	ध	-	मध	रेसा
क	हाँ	है,	श्या	ऽ,	म	ल,	य	ह	कि,	ना	ऽ,	रा	ऽऽ
×			२		३		×			२		३	

बाकी अन्तरे इसी प्रकार से है।

यह गीत राग "मिश्रित बागेश्री" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध किया गया है। यह राग "काफी" थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गंधार एवं निषाद स्वर कोमल होते हैं तथा बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। मध्यम, धैवत और निषाद स्वरों की संगति इस राग की शोभा बढ़ाती है। इस राग का गायन समय मध्य रात्रि है। ताल रूपक में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। तथा प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

१७- "दलित जन पर करो करुणा"[६४]

(राग - गोरख कल्याण) (ताल - रूपक)

स्थाई

नि॒	नि॒	ध	म	म	रे	सा	रे	-	रे	सा	-	सा	-
द	लि	त,	ज	न,	प	र,	क	रो	ऽ,	क	रु,	णा	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	-	म	ध	-	ध	ध	नि॒	नि॒	ध	म	-	म	-
दि	ऽ	न,	ता	ऽ,	प	र,	उ	त	र,	आ	ऽ,	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	
म	ध	ध	सां	-	सां	-	नि॒	नि॒	ध	मध	नि॒	ध	-
प्र	भु	तु,	म्हा	ऽ,	री	ऽ,	श	ऽ	क्ति,	अ	रू,	णा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा

म ध - सा सा सां रें नि नि ध सां - सां -
ह रि ऽ, त न, म न, प्रि ऽ तौ, पा ऽ, व न
× २ ३ × २ ३

ध सां रें मं रें सां रें नि [illegible] ध सां - सां -
म धु र, हो ऽ, मु ख, म नो ऽ, मा ऽ, व न
× २ ३ × २ ३

मं रें सां सां सां सां रें नि नि ध मध नि ध ध
स ह ज, चि त, व न, प र त, रंऽ ऽ, गी त
× २ ३ × २ ३

सां - रें नि - ध - नि नि ध म म रे -
हो ऽ बु, म्हा ऽ, री ऽ, कि र ण, त रु, णा ऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

म - ध सां - सां रें नि - ध सां - सां -
दे ऽ ख, के ऽ, भ व, न हो ऽ, न त, सि र
× २ ३ × २ ३

ध सां रें मं रें सां रें नि नि ध सां - सां -
स मु ऽ, ध न, म न, म दा ऽ, हो ऽ, स्थि र
× २ ३ × २ ३

मं रें सां सां सां सां रें नि नि ध मध नि ध ध
पा ऽ र, क र, जी ऽ, व न नि, रंऽ ऽ, त र
× २ ३ × २ ३

सां	सां	रें	नि॒	नि॒	ध	-	नि॒	-	ध	म	म	रे	-
र	है	ऽ,	ब	ह,	ती	ऽ,	म	ऽ	क्ति,	व	ह,	णा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

यह गीत "राग गौरख-कल्याण" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध किया गया है। यह राग "कल्याण" थाट से उत्पन्न होता है। "ताल-रूपक" में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें विभाजित होती हैं।

१८- "बहुत दिनों बाद खुला ये आसमान"[६५]

(राग - नंद) (ताल - दादरा)

स्थाई

ग	ग	ग	ग	ग	म	प	प	प	प	प	ध
ब	हु	त,	दि	नों	ऽ,	बा	ऽ	द,	खु	ला	ऽ
×			०			×			०		
सां	-	नि	ध	-	प	प	-	-	-	-	-
ये	ऽ	ऽ,	आ	ऽ	स,	मा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	न
×			०			×			०		
सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	-	सां	-	-
नि	क	ली,	ऽ	है	ऽ,	धू	ऽ	ऽ,	प	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
नि	सां	नि	ध	-	प	प	-	-	-	-	-
हु	आ	ऽ,	खु	श	ज,	हा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	न
×			०			×			०		

अन्तरा

नि	सां	सा	सां	नि	नि	रें	सां	सां	सां	सां	सां
दि	खी	ऽ,	यै	ऽ	दि,	शा	ऽ	ऽ,	यै	ऽ	ऽ
×			0			×			0		
नि	सा	नि	ध	प	प	सां	–	–	–	–	–
मक	ल	ऽ,	कै	ऽ	ऽ,	पे	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ड़
×			0			×			0		
रें	रें	रें	रें	–	रें	रें	–	रें	रें	–	रें
च	र	ने,	ऽ	को	ऽ,	च	ले	ऽ,	ढो	ऽ	र
×			0			×			0		
सा	–	नि	ध	प	प	सां	–	–	–	–	–
गा	ऽ	य,	मैं	ऽ	स,	में	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ड़
×			0			×			0		
सां	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	सां	सां	सां	सां
खे	ऽ	ल,	ने	ल	गे,	ल	ड़	के,	ऽ	ऽ	ऽ
×			0			×			0		
नि	सां	नि	ध	प	ध	सां	–	–	–	–	–
छे	ऽ	ड़,	छे	ऽ	ड़,	छे	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ड़
×			0			×			0		
ग	–	म	प	प	प	प	प	प	प	प	प
ल	ड़	कि,	यों	ऽ	ध,	रो	ऽ	ऽ,	कों	ऽ	ऽ
×			0			×			0		
सां	–	नि	ध	–	प	प	–	–	–	–	–
क	र	ऽ,	भा	ऽ	स,	मा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	न
×			0			×			0		

बाकी अन्तरे सभी इसी प्रकार से हैं ।

यह गीत " राग - नंद " में तथा ताल दादरा में निबद्ध किया गया है । यह राग " कल्याण " थाट से उत्पन्न होता है । ऐसा माना जाता है कि इस राग की रचना कामोद, बिहाग, हमीर और गौड़ सारंग के मिश्रण से हुई है । इस राग की यह विशेषता है कि मध्यम, पर मुक्त न्यास तथा वक्र चलन से " राग नंद " अन्य रागों से एकदम अलग हो जाता है । इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है । " ताल दादरा " में कुल छः मात्रायें तथा दो भाग होते हैं । प्रत्येक भाग में तीन-तीन मात्रायें होती हैं ।

१६- " बादल गरजो, बादल गरजो " [६६]

(राग - शिवरंजनी) (ताल दादरा)

स्थाई

पा	-	ग॒	ग॒	प	प	ध	-	-	-	-	-
बा	ऽ	द,	ल	ग	र,	जो	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ
x			0			x			0		
ध	-	सां	सां	ग॒ं	रें	सां	-	-	-	-	-
बा	ऽ	द,	ल	ग	र,	जो	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ
x			0			x			0		
सां	-	सां	सां	-	सां	सां	-	ध	ध	प	-
घे	ऽ	र,	घे	ऽ	र,	घो	ऽ	र,	ग	ग	न
x			0			x			0		
प	-	ध	ध	ध	रे	सां	—	—	—	—	—
धा	ऽ	रा,	[illegible]	ध	र,	ओ	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ
x			0			x			0		
प	प	प	प	प	प	प	-	ध	-	ध	ध
ल	लि	त,	ल	लि	त,	का	ऽ	ले,	ऽ	घुं	घ

ध	-	सां	-	गं	रें	रें	-	-	-	-	रें
रा	ऽ	ले,	ऽ	ऽ	ऽ,	बा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ल
×			0			×			0		

गं	-	रें	सां	-	-	ध	-	सां	प	-	प
क	ऽ	ल्प,	ना	ऽ	ऽ,	के	ऽ	से,	पा	ऽ	ले
×			0			×			0		

सां	-	सां	सां	सां	सां	ध	ध	ध	ध	ध	-
वि	ऽ	धु,	त	छ	वि,	उ	र	में,	ऽ	ऽ	ऽ
×			0			×			0		

सां	सां	सां	सां	सां	सां	ध	ध	ध	ध	ध	ध
क	वि	न,	व	जी	ऽ,	व	न	वा,	ऽ	ले	ऽ
×			0			×			0		

प	प	प	प	प	प	ध	-	ध	ध	ध	-
व	ऽ	क्र,	छि	पा	ऽ,	नू	ऽ	त,	न	क	वि
×			0			×			0		

ध	-	प	प	ग	रे	ग	-	-	-	-	-
ता	ऽ	फि,	र	भ	र,	दो	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ
×			0			×			0		

अन्तरा

सां	सां	सां	सां	सां	सां	ध	-	ध	ध	ध	ध
वि	क	ल,	वि	क	ल,	उ	ऽ	न्म,	न	थे	ऽ
×			0			×			0		

घ	-	सां	सां	सां	-	गं	रें	-	-	-	-
उ	ऽ	न्म ,	न	वि	ऽ ,	श्व	के	ऽ ,	ऽ	ऽ	ऽ
×			0			×			0		

रें	गं	-	रें	गं	-	सां	सां	रें	घ	सां	-
नि	दा	ऽ ,	य	के	ऽ ,	स	क	ल ,	ज	न	ऽ
×			0			×			0		

सां	-	सां	सां	-	सां	सां	-	सां	सां	-	सां
आ	ऽ	ये ,	ऽ	अ	ऽ ,	आ	ऽ	त ,	दि	शा	ऽ
×			0			×			0		

सां	-	सां	घ	-	सां	प	-	प	-	-	-
से	ऽ	अ ,	नं	ऽ	त ,	के	ऽ	ऽ ,	घ	न	ऽ
×			0			×			0		

प	-	प	प	-	घ	प	-	प	प	प	प
त	ऽ	त्त ,	घ	रा	ऽ ,	ज	ल	से ,	ऽ	फि	र
×			0			×			0		

घ	-	प	प	ग	रे	ग	-	-	-	-	-
शी	ऽ	त ,	ल	क	र ,	दो	ऽ	ऽ ,	ऽ	ऽ	ऽ
×			0			×			0		

यह गीत " राग- शिवरंजनी " में तथा " ताल - दादरा " में निबद्ध किया गया है। यह राग " काफी " थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गंधार व निषाद स्वर कोमल होते हैं, बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। " ताल - दादरा " में छः मात्रायें तथा दो भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में तीन-तीन मात्रायें होती हैं। इसके अन्तर्गत " बादल-राग " की कविताओं को लिया जा सकता है जैसे " ऐ निर्बन्ध "[97] " सिन्धु के अश्रु "[98], उमड़ सृष्टि के अन्तहीन अम्बर से "[99], " निरंजन बने नयन अंजन "[100].

"तिरती है समीर - सागर पर"[101] इत्यादि ।

२०- "प्राण तुम पावन सावन गात"[102] -

(राग - यमन)   (ताल - केहरवा)

स्थाई

- प
ऽ प्रा

- प रे रे प प रे रे ग - सा सा सा - - -
ऽ ण तु म , ऽ पा व न , सा ऽ व न , गा ऽ त , ऽ
x 0 x 0

नि रे ग रे ग ग म - - मे ध नि सां निध प -
ज ल ज जी , ऽ व न ऽ , ऽ यौं व न , अ वऽ धा ऽ
x 0 x 0

प प रे रे ग - सा सा सा - - -
त पा व न , सा ऽ व न , गा ऽ त प्रा ,
x 0 x

अन्तरा

- गग मे ध नि - नि नि - मे मे धनि सां सां सां सां सां
ऽ मृदु बूँ ऽ , दों ऽ चि त , ऽ वन कीऽ ऽ , ल ड़ि यौं ऽ
x 0 x 0

नि - नि नि - नि नि नि प ध नि ध प प प -
के ऽ शों में , ऽ ध मु ख , प ल क अं , ख ड़ि यौं ऽ
x 0 x 0

नि रें गं रें गं रें सां सां नि ध नि ध प प प प
प्र म न वा, ऽ रू विं ऽ, न्त न कौ ऽ, ध ड़ि यॉं ऽ
× ० × ०

- पप प प प - रें रें ग - - प
ऽ जल भ र, भू ऽ मि सु, जा ऽ त प्रा,
× ० ×

अन्तरा

- गग मे ध नि - नि नि - मंमं धनि सां सां सां सां सां
ऽ हरि ऽ ज्वा, ऽ र कौ ऽ, प रीऽ याऽ ऽ, फू ... मी ऽ
× ० × ०

नि - नि नि - नि नि नि प ध नि ध प प प -
अ र ह र, ऽ अ ब ऽ, चू मीं ऽ त, ब चू मीं ऽ
× ० × ०

नि रें गं रें गं रें सा सां नि ध नि ध प प प -
उ ड़ द ऽ, ब द ल क, र फै ऽ लो, ऽ धू मीं ऽ
× ० × ०

- पप प प प - रें रें ग - - प
ऽ लिऽ ये ऽ, मूँ ऽ ग नें, पा ऽ त, प्रा
× ० ×

यह गीत " राग यमन " में तथा " ताल - केहरवा " में निबद्ध किया गया है। " राग यमन " " कल्याण " थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम तीव्र होता है तथा बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। यह पूर्वांगवादी राग है। ताल केहरवा में आठ मात्रायें होती हैं दो भाग होते हैं तथा

प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती है। इस राग के अन्तर्गत प्रकृति सौन्दर्य के गीत आ सकते हैं जैसे - "फिर उपवन में खिली चमेली"[१०३], "भर गया, जुही के गन्ध पवन"[१०४], "पारस, मदन हिलोर न दे तन"[१०५], "द्रुमों की कलियां नवल खुलीं"[१०६], "भावना रंग की तुमने, प्राण"[१०७] इत्यादि।

२१- "जय तुम्हारी देख ली भी"[१०८]

(राग - गौरख कल्याण) (ताल रूपक)

स्थाई

सा	गा	गा	म	म	म	म	ध	ध	ध	नि	नि	नि	नि
ज	य	तु,	म्हा	ऽ,	री	ऽ,	दे	ऽ	ख,	ली	ऽ,	भी	ऽ
×			२		३		×			२		३	

नि	-	ध	म	-	रें	रें	नि	-	नि	रें	-	रें	-
रू	ऽ	प,	की	ऽ,	गु	ण,	की	ऽ	र,	सी	ऽ,	ली	ऽ
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा

म	-	ध	सां	-	सां	-	रें	मं	रें	नि	ध	सां	-
वृ	ऽ	द्धि,	हूँ	ऽ,	मैं	ऽ,	वृ	ऽ	द्धि,	की	ऽ,	क्या	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सां	-	रें	नि	-	नि	-	नि	-	ध	म	-	रें	-
सा	ऽ	ध,	ना	ऽ,	की	ऽ,	ऽ	सि	द्धि,	की	ऽ,	क्या	ऽ
×			२		३		×			२		३	

ध	-	ध	नि	-	नि	-	नि	-	ध	म	-	रें	-
खि	ल	खु,	का	ऽ,	है	ऽ,	फू	ऽ	ल,	मे	ऽ,	रा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

नि - ध म - रे - रे - नि रे - रे -
पं ऽ ख , ड़ि यॉं , हो ऽ , व ली ऽ , ढ़ी ली , ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत राग "गोरख-कल्याण" में तथा ताल रूपक में निबद्ध किया गया है। यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। "ताल - रूपक" में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। तथा प्रत्येक भाग में दो - तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

२२- "भारति जय विजय करे" १०६

(राग - यमन) (ताल - रूपक)

तथा

(ताल - दादरा)

स्थाई

नि़ नि़ रे ग ग प प रे ग सा सा - सा -
भा ऽ र , ति ऽ , ज य , वि ज य , क रे , ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

प प प प प मं - मं मं ध मं ग रे -
क न क , श ऽ , स्य ऽ , क म ल , ध रे , ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

दादरा.

ग ग ग म म ध सां सां सां सां सां सां
लं का ऽ , प त द , ल श त , द ल ऽ
× ० × ०

नि नि नि नि - ध सां - नि ध प प
ग र्जि तो , ऽ ऽ मिं , सा ऽ ग , र ज ल ,
× ० × ०

मं	-	ध	-	नि	सां	ध	नि	ध	प	-	प
धौ	ऽ	ता,	ऽ	सु	वि,	च	र	णा,	यु	ग	ल
×			०			×			०		
सा	सा	प	प	थ	थ	प	प	रे	रे	ग	-
स्तव	क,	र	ब	हु,	अ	ऽ	र्थ,	भ	रे	ऽ	
×			०			×			०		

अन्तरा

ग	ग	मं	मं	मं	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां
त	रू	ऽ,	तृ	णा	व,	न	ल	ता,	व	म	न
×			०			×			०		
नि	नि	नि	नि	-	ध	सां	-	नि	ध	प	प
अं	ऽ	च,	ल	में	ऽ,	ख	चि	त,	सु	म	न
×			०			×			०		
मं	-	ध	-	नि	सां	ध	नि	ध	प	-	प
गं	ऽ	गा,	ऽ	ज्यो	ऽ,	तिं	ज	ल,	क	णा	ऽ
×			०			×			०		
सा	सा	प	प	ग	ग	प	प	रे	रे	ग	-
ध	व	ल,	धा	ऽ	र,	हा	ऽ	र,	ग	ले	ऽ
×			०			×			०		

यह गीत "राग - यमन" में तथा ताल "रूपक" तथा "दादरा" में निबद्ध किया गया है। इस गीत में छंदों का विभाजन एकसा न होने के कारण मात्राओं की गणना बराबर न हो सकी है। अत: इस गीत के स्थाई को "ताल रूपक" में

तथा अन्तरों को ताल "दादरा" में बांधा गया है। इसके शेष सभी अन्तरे भी इसी प्रकार से होंगे।

"राग - यमन" "कल्याण" थाट से उत्पन्न होता है इसमें मध्यम तीव्र है तथा बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। ताल रूपक में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं। ताल - दादरा में छ: मात्रायें तथा दो भाग होते हैं प्रत्येक भाग में तीन-तीन मात्रायें होती हैं।

२३- "बौरे आम की भौंरे बोले"[११०]

(राग - सारंग) (ताल - केहरवा)

स्थाई

- सां -नि प रे - म रे नि - सा नि रे - सा -
ऽ बौ रे ऽरे ऽ, आ ऽ म की, भौं ऽ रे ऽ, बो ऽ ले ऽ
x 0 x 0

- सां -म रे प - प - - नि नि सां निसां -नि पम रे
ऽ प्रा ऽत की, गा ऽ त ऽ, ऽ पा त के, तोऽ ऽऽ लेऽ ऽ
x 0 x 0

अन्तरा

नि नि -म प नि - - नि सां सां सां नि रें रें सां प
स र ऽसा ऽ, हँ ऽ ऽ स, मौ र म धु, व न की ऽ
x 0 x 0

- प -रें सां रें - - सां नि - - सां नि सां नि प
ऽ आं ऽखों छ, वी ऽ ऽ आ, हँ ऽ ऽ आ, न न की ऽ
x 0 x 0

- सां -नि प रे - म रे नि - सा नि रे - सा -
आ ऽ लऽ स , दू ऽ र हु , आ ऽ म न , भा ऽ या ऽ
× ० × ०

- साता -म रे प - प प नि - सां सां निसां -नि पम रे
ऽ विढ़ि ऽया ऽ , नै ऽ सु ख , के ऽ मु ख , खोऽ ऽऽ लेऽ ऽ
× ० × ०

अन्तरा

नि नि -म प नि - - नि सां सां सां नि रें रें सां -
कैं ऽ सीऽ ऽ , ज्यो ऽ ऽ ति , क्रां ह से ऽ , कु ल की ऽ
× ० × ०

- प -रें सां रें - - सां नि - सा नि नि सां नि प
ऽ दु बंऽ ल , नै ऽ द द , क र दी ऽ , ब ल की ऽ
× ० × ०

-सां -नि प रे - प रे नि - सा नि रे - सा -
आऽ ज के , सा ऽ ज भू , ल ग ये स , ऽ व ज न
× ० × ०

- सासा -म रे प - प प नि - सां सां निसां नि पम रे
क लऽ केऽ ऽ , जी ऽ व न , जो ऽ र स , घोऽ ऽ लेऽ ऽ
× ० × ०

यह गीत "राग - सारंग" में तथा "ताल अध्धा त्रिताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग "शुद्ध सारंग कहलाता है। इस राग का उल्लेख "हृदय प्रकाश" व "हृदय कौतुक" नामक ग्रंथों में पाया जाता है। यह राग "काफी थाट" में उत्पन्न हुआ है। इसमें दोनों मध्यम व दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है।

इसका गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है । "ताल त्रिताल" में कुल सोलह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं । प्रत्येक भाग में चार - चार मात्रायें होती हैं ।

इस गीत में प्रकृति - चित्रण किया गया है । "कली तुम्हारी - फिरी कानन में"[१११] — "श्याम गगन नव घन मंडलायें"[११२] — "बढ़ बढ़ कर बहती पुरवाई"[११३] — "पड़ी चमेली की माला कल"[११४] — "मालती खिली कृष्ण मेघ की"[११५] — "फिर बेले में कलियां आईं"[११६] — "फूलों के दीपों की माला"[११७] — "सहज फूले फूले उपवन"[११८] इत्यादि गीतों को भी इस राग में निबद्ध किया जा सकता है ।

२४- "नयनों का नयनों से बंधन"[११९]

(राग - भूपाली) (ताल - दादरा)

स्थाई

ध	प	ग	रे	सा	-	रे	सा	रे	-	ग	रे	ग	-	ध	ध
न	य	नों	ऽ,	का	ऽ	न	य,	नों	ऽ	से	ऽ,	बं	ऽ	ध	न
०				३				×				२			

ग	ग	प	प	ध	ध	प	प	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	सा
कां	ऽ	पें	ऽ,	थ	र	थ	र,	थ	र	थ	र,	यु	ग	ल	न
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	ग	प	प	ध	-	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
स	म	कें	ऽ,	हि	ऽ	ले	ऽ,	वि	ट	ऽ	प,	हं	स	क	र,
०				३				×				२			

मां	ध	-	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	गां	ध	ध	प	प
च	हैं	ऽ	मं,	ऽ	जु	खि	ले,	सु	म	ऽ	न,	ख	स	क	र,
०				३				×				२			

गं रें - रें मं सं सं सं   ध - रें रें सं सं ध प
ग ई ऽ वि, ब श क र,   बां ऽ ऽ ध, व श क र
o   3   x   २

ग - प प ध ध ध ध   सं सं ध प ग रे सा सा
नि ऽ फं र, ल ह रा ऽ,   या ऽ स र, जी ऽ व न
o   3   x

अन्तरा

ध ध ग ग प - ध ध   सं -सं सं सं रें मं सं-
ज्ञा ऽ ऽ त, र ऽ श्मि ऽ,   गा ऽ न चु, म रे ग ई
0   ३   x   २

सं - ध ध -मं - सं सं   सं रे सं - ध ध प प
बं ऽ धी हु, ई ऽ छ ली,   भा व ना ऽ, न ई ऽ ऽ
0   ३   x   २

गं रें - मं - रें सं सं   ध - रे - सं सं ध प
ग ई ऽ दू, ऽ र हु ऽ,   छि ऽ जो ऽ, मृ खा श यी
0   ३   x   २

म ग प प ध सं ध प   सं सं ध प ग रे सा -
छि पे ऽ वे, र ऽ ह स्य,   दि खें ऽ ऽ, नू ऽ त न
0   ३   x   २

बाकी सब अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग भूपाली" में तथा "ताल – त्रिताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग "कल्याण" थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें सब स्वर शुद्ध होते हैं। यह बहुत ही सरल और मधुर राग है। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। गाते समय इसे "शुद्ध कल्याण" "जैत कल्याण" तथा "देशकार" से बचाने में कुशलता की आवश्यकता होती है। यह

केवल पांच स्वरों का अपने ढंग का स्वतंत्र राग है ।

"ताल - त्रिताल" में सोलह मात्रायें होती हैं । तथा चार भाग होते हैं । प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती हैं । यह गीत संयोग - श्रृंगार के अन्तर्गत आता है । "पावन करो नयन"[120] "मेरे प्राणों में आओ - -"[121] "कहाँ उन नयनों की मुस्कान"[122] "स्पर्श से लाज लगी"[123], "एक ही आशा में, सब प्राण"[124] "एब से मैं पथ देख रही, प्रिय"[125], "तुम आओ सुहाओ - हमारी गली"[126] "एक बार भी यदि अजान के, अन्तर से उठ आ जाती तुम"[127] "मिल गए - एक प्रणय में प्राण"[128] "प्रिय के हाथ लगाये जागी"[129] "नयन नहाये, जब से उसकी छवि में रूप बहायें"[130], "लगी लगन, क्यों नयन"[131] इत्यादि श्रृंगार के गीतों को भी इस राग में निबद्ध किया जा सकता है ।

२५- "कैसी बजी बीन, सजी मैं दिन दीन"[132]

(राग - यमन) (ताल केहरवा तथा ताल दादरा)

स्थाई

(ताल - केहरवा)

पनि	धनि	प	-	मं	प	मं	ग	प-	-	-	रे	ग	रे	सा	—
कैS	SS	सी	S,	ब	जी	S	S,	बीन	S	S	स,	जी	S	S	S
x				0				x				0			

-	निरे	-ग	रे	सा	-	-	-	-
S	मैंS	दिन		दीन	S	S	S	
x				0				

अन्तरा

(ताल - केहरवा)

-	गग	-मं	ध	नि	नि	नि	-	-	मं	मं	ध	सां	सां	सां	-
S	हृद	Sय	में,	कौ	न	जो	S,	S	हे	ड	ता,	बाँ	सु	रि	S
x				0				x				0			

\- निनि - नि - नि नि - - नि नि नि ध नि ध प
हु ईऽ ज्यो ऽ, त्स ना म यी, अ खि ल मा, या ऽ पु री
× 0 × 0
\- सां गं रें सां - नि ध सां सां सां - - - निध प
ऽ ली ऽ न, स्व र ऽ स, ली ल में ऽ, ऽ ऽ मेंऽ ऽ
× 0 × 0

प नि ध प - - मे ग प - - रे ग रे सा नि
ब ला र ही, ऽ ऽ ऽ ऽ, मी ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ न
× 0 × 0

अन्तरा

(ताल - दादरा)

ग - ग मं ध - ध नि नि नि - -
स्प ऽ ष्ट, ध्व नि ऽ, आ ऽ ध्व, नि ऽ ऽ
× 0 × 0

मं मं - ध ध - सां - सां सां - -
स जि ऽ, या मि ऽ, नी ऽ भ, ली ऽ ऽ
× 0 × 0

सां गं रें सां नि नि नि रें सां नि - -
मं ऽ द, प द आ, बं ऽ न्द, कुं ऽ ज
× 0 × 0

ध सां नि प - मं प - - - - -
उ ऽ र, की ऽ ग, लो ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ
× 0 × 0

सां गं रें सां नि - नि रें सां नि ध ध
मं ऽ जु, म धु ऽ, गुं ऽ ज, री ऽ त
× 0 × 0

ध	सां	नि	ध-	प	मं	प	-	-	-	-	-
क	लि	ऽ,	दल	म	मा,	सी	ऽ	न,	ऽ	ऽ	ऽ
x			0			x			0		

बाकी अन्तरे इसी प्रकार से हैं । यह गीत राग "यमन" में तथा "ताल केहरवा" तथा "ताल दादरा" में निबद्ध किया गया है । इस गीत की स्थाई व पहला अन्तरा "ताल – केहरवा" में तथा दूसरा अन्तरा "ताल – दादरा" में निबद्ध किया गया है । मात्राओं का विभाजन बराबर न होने से ऐसा करना आवश्यक हो गया है । "ताल – केहरवा में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार – चार मात्रायें होती हैं । "ताल – दादरा" में छः मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में तीन – तीन मात्रायें होती हैं ।

"राग – यमन" "कल्याण थाट से उत्पन्न होता है । इसमें मध्यम तीव्र होता है तथा शेष सभी स्वर शुद्ध होते हैं इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है ।

२६- "स्वर में छायानट भर दो"[१३३]

(राग – छायानट) (ताल – केहरवा)

स्थाई

ग	म	रे	रे	रे	ग	म	प	म	रे	सा	नि	सा	-	-	-
स्व	र	में	ऽ,	छा	ऽ	या	ऽ,	न	ट	भ	र,	दो	ऽ	ऽ	ऽ
x				0				x				0			

ग	म	रे	रे	प	-	प	-	ध	नि	प	प	मं	-	रे	-
पा	ऽ	ब	न,	प्रा	ऽ	णों	ऽ,	को	ऽ	क	र,	दो	ऽ	ऽ	ऽ
x				0				x				0			

अन्तरा

प प प - सां - सां सां - सांसां सां ध रें - सां -
अ नि या ऽ, रे ऽ ट्ट ग, ऽ चप ल उ, पा ऽ न्तों ऽ
× 0 × 0

- ध ध ध - ध ध - - धनि -ध नि ध प प -
ऽ स री रे, ऽ ण यें ऽ, ऽ बला न्तो ऽ, प्रा ऽ न्तो ऽ
× 0 × 0

- मम - म - म म रे प प म रे सा - सा -
ऽ खले ऽ ले, ऽ ल उ प, व न के ऽ, शा ऽ न्तो ऽ
× 0 × 0

- प - प प - प - मं प मं धप म - ग -
ऽ सी ऽ मा, ओं ऽ को ऽ, न व व रऽ, दो ऽ ऽ ऽ
× 0 × 0

अन्तरा

प प प - सां - सां सां - सांसां सां ध रें - सां -
आ ऽ लिं ऽ, कि त बां ऽ, ऽ न्धऽ व ता, आ ऽ ये ऽ
× 0 × 0

- ध ध ध - ध ध - - धनि -ध नि ध प प -
ऽ वै भ व, ऽ वि पु ल, प राऽ गऽ मु, ख जा ऽ ये
× 0 × 0

- मम - म - म म रे प प मं रे सा - सा -
ऽ जीऽ ऽ व, ऽ न को ऽ, यौ ऽ व न, न ह ला ये
× 0 × 0

प	-	प	प	-	प	-	मं	प	मं	धप	म	-	ग	-
ऽ	को	ऽ	हूँ,	अ	वि	ऽ	न,	श्व	र	स	रऽ	दो	ऽ	ऽ	ऽ
×			0				×				0				

यह गीत "राग-छायानट" में तथा "ताल - केहरवा" में निबद्ध किया गया है। "राग - छायानट" "कल्याण" थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों मध्यम लिये जा सकते हैं, किन्तु तीव्र मध्यम जब लेना हो, तो केवल "मं प ध प" कर के ही लेना चाहिये। शुद्ध मध्यम आरोह, अवरोह दोनों में लिया जाता है। पंचम और रिषभ की संगति इसमें भली मालूम होती है। ग - नि, इन दोनों स्वरों को क्रम में वक्र किया जाता है। अवरोह में कभी कभी कोमल निषाद भी विवादी स्वर के नाते लिया जाता है। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग के अन्तर्गत "मेरे प्राणों में आओ"[134] "चाहते हो किसको सुन्दर"[135] - "चहकते नयनों में जो प्राण"[136] इत्यादि गीतों को निबद्ध किया जा सकता है।

२७- "मौन रही हार"[137]

(राग जयजयवन्ती) (ताल एकताल)

स्थाई

रे	ग	रे	सा	नि़	सा	ध	-	नि	सा	ग	म
मौ	ऽ,	ऽ	न,	ऽ	र,	हा	ऽ,	ऽ	ऽ,	ऽ	र
×		0		२		0		३		४	
म	ग	म	ध	ध	ध	ध	नि	ध	प	म-	म
प्रि	य,	ऽ	प,	थ	ऽ,	प	थ,	प	र,	चल	ती
×		0		२		0		३		४	
ध	नि	सां	गां	सां	सां	नि	ध	म	रे	ग	रे
स	ब,	क	ह,	ते	ऽ,	श्रृं	ऽ,	ऽ	गा,	ऽ	र
×		0		२		0		३		४	

म ग म नि ध नि सां - सां सां सां सां
क णा, क णा, क रु, कं ऽ, क णा, प्रि य
× ० २ ० ३ ४

सां सां गं गं गं मं रें गं रें सां - सां
कि णा, कि णा, र व, किं ऽ, कि णी, ऽ ऽ
× ० २ ० ३ ४

सां सां सां सां सां सां नि नि नि ध ध ध
र णा, न र, णा न, नू ऽ, पु र, उ र
× ० २ ० ३ ४

ध - ध ध नि ध म ग म रे ग रे
ला ऽ, ज लीं, ऽ ट, रं ऽ, ऽ कि, णी ऽ
× ० २ ० ३ ४

सा - सा सा ध नि सा - ग ग म म
औ ऽ, र मु, ख र, पा ऽ, य ल, स्व र,
× ० २ ० ३ ४

म ध - ध नि ध म म म रे ग रे
क रे, ऽ बा, ऽ र, बा [illegible], र बा, ऽ र
× ० २ ० ३ ४

सां सां नि नि ध ध ध नि ध म ग म
प्रि य, प थ, प र, च ल, तौ म, ऽ ब
× ० २ ० ३ ४

रे ग रे सा ध नि सा - ग - म -
क ह, तै ऽ, श्रृं ऽ, गा ऽ, ऽ ऽ, र ऽ
× ० २ ० ३ ४

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग जयजयवन्ती" में तथा "ताल एकताल" में निबद्ध किया गया है। इस ताल में कुल बारह मात्रायें होती हैं छः भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

"राग - जयजयवन्ती" खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों गंधार व दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसके आरोह में तीव्र ग - नि और अवरोह में कोमल ग - नि लेने होते हैं, लेकिन कभी कभी अवरोह में भी तीव्र गंधार लिया जाता है। कोमल गंधार केवल अवरोह में ही ले सकते हैं और यह स्वर दोनों ओर से रे ग रे, इस प्रकार रिषभ द्वारा घिरा रहता है। मंद्र - पंचम और मध्य-रिषभ का मिलाप इसमें बहुत सुन्दर मालूम देता है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। यह गीत भी संयोग - श्रृंगार का है। "अपने सुख स्वप्न से खिली"[१३८] "अमरण भर वरण गान"[१३९] "रहो आज मन में"[१४०] इत्यादि, गीतों को इस राग में निबद्ध किया जा सकता है।

स्र- "मन चंचल न करो"[१४१]

(राग - देस) (ताल - धम्मार)

स्थाई

नि	सा	रे	प	म	-	ग	सा	नि	सा	नि	सा	नि	प
म	न	चं	च	ऽ,	ल	न,	क	रो	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x					२		०			३			
नि	सा	रे	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग	रे	म	ग	सा
प्र	ति	प	ल	अँ,	च	ल,	से	पु	ल,	कि	त	क	र,
x					२		०			३			

रे रे म म प प - प पध म ग म ग रे
के ऽ ब ल ह, रो ऽ, ऽ ऽऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ
× २ ० ३

अन्तरा

म - प नि नि नि - सां नि सां सां - सां -
तु ऽ म्हे खो ऽ, ज ता, मैं नि जं, न ऽ मैं ऽ
× २ ० ३

नि नि नि - सां नि सां रें नि ध नि- ध प -
भ ट कूं ज ब, घ न, जौ व, न, वन मैं ऽ ऽ
× २ ० ३

रे - म म प प प म प प प ध मग रे
भे ऽ द ग ह, न त, म म नो, ग ग नऽ मैं
× २ ० ३

रे - म म प नि नि सां - - पध म ग रे
ज्योंऽ तिं म यी, उ त, रो ऽ ऽ, ऽऽ ऽ ऽ ऽ
× २ ० ३

अन्तरा

म - प नि नि नि - सां नि सां सां - सां -
मुं दे प ल क, ज ब, नि शा श, य न मैं ऽ
× २ ० ३

नि नि नि - सां नि सां रें नि - ध नि ध प
ल गे प्र ब ल, म न, क ल्प ऽ, व य न मैं
× २ ० ३

रे - म म प प म म प प प ध मग रे
मि ला ऽ उ से, तु म, मो ऽ ह, अ य नऽ में
× २ ० ३

रे - म प प नि नि सां - - पध म ग रे
स्व ऽ प्न स्व ऽ, रू प, ध रो ऽ, ऽऽ ऽ ऽ ऽ
× २ ० ३

अन्तरा

म - प नि नि नि - सां नि सां सां - सां -
तु ऽ म्हीं र हो, मि ल, जा ये ज, ग त स ब
× २ ० ३

नि नि नि - सां नि सां रें नि - ध नि- ध प
ए क त त्व में, ज्यों ऽ, भ व ऽ, क लऽ र व
× २ ० ३

रे - म म प प प म प प प ध मग रे
ज्यों ऽ त्स ना म, यी व, म को कि, र णा सऽ ब
× २ ० ३

रे - म म प नि नि सां - - पध म ग रे
पि ला मि ला ऽ, उ र, लो ऽ ऽ, ऽऽ ऽ ऽ ऽ
× २ ० ३

यह गीत "राग - देस" में तथा "ताल धम्मार" में निबद्ध किया गया है। "धम्मार" ताल में कुल चौदह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में पांच चार, तीन, दो ऐसी मात्रायें होती हैं। वैसे संगीत की दृष्टि से सिर्फ "होरी" के ही गीत "ताल धम्मार" में निबद्ध किये जाते हैं परन्तु निराला जी ने इसके अपवाद स्वरूप अपने गीतों को विशेष तौर पर "धम्मार" ताल में ही निबद्ध किया है। इसी प्रकार महाकवि ने अपनी पुस्तक "गीतिका" में इस ताल का विशेष तौर पर[१४२] उल्लेख किया है तथा आपने बतलाया है जैसे - "प्राण घन को स्मरण करते"

नामक गीत में पहली दोनों पंक्तियों में चौदह मात्रायें हैं इसलिये इसे धमार ताल में बांधा है। " पहली और तीसरी पंक्ति में चौदह-चौदह मात्राएं नहीं हैं, दूसरी पंक्ति में है। पहली और तीसरी पंक्ति में मात्रा भरने वाले शब्द इसलिये कम हैं कि वहाँ स्वर का विस्तार अपेक्षित है और दोनों जगह बराबर पंक्तियाँ रखी गयी हैं। यह मतलब गायक आसानी से समझ लेता है। यह उस तरह की घट बढ़ नहीं जैसी पुराने उस्ताद गवैयों के गीतों में मिलती है। पहली लाइन की चौदह मात्रायें इस तरह पूरी होंगी :-

१	२	२	२	२	२	२	१	= १४
।	।	।	।	।	।	।	।	
स्ने +	ह +	ओ +	त +	प्रो +	ओ +	ओ +	त	

गाने में हर मात्रा अलग उच्चारित होगी। इसी प्रकार पंक्ति की मात्राएँ बैठेंगी। यह संगीत रचना की कला में गव्य हैं। "[१४३]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निराला जी ने अपने गीतों को किस प्रकार इस ताल में बांधा है।

"राग - देस" "खमाज" थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों निषाद लगते हैं शेष सब स्वर शुद्ध होते हैं। इस राग में गांधार स्वर स्पष्ट रूप से लिया जाता है। इस राग का गायन समय मध्य रात्रि है। इस राग के अन्तर्गत निम्नलिखित गीतों को गाया जा सकता है जैसे - "बह जाता रे परिमल - मन"[१४४], "प्रतिक्षण मेरा मोह मलिन मन"[१४५] इत्यादि।

२६- "प्रिय यामिनी जागी"[१४६]

(राग - मालकौंस) (ताल - रूपक)

स्थाई

म	म	ग	म	ग	सा	-	ध	नि	-	सा	म	म	-
प्रि	य	या,	ऽ	मि,	नी	ऽ,	ऽ	ऽ	जा,	ऽ	ऽ,	गी	ऽ
×			२		३		×			२		३	

ग ग ग म - ध ध नि नि नि सां सां सां सां
अ ल स, पं ऽ, क ज, दृ ग अ, रु ण, मु ख
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

ग ग ग - ग म ग म ग सा - नि सां सां
खु ले के, ऽ श, अ शे, श शीं भा, भ र, र हे,
× २ ३ × २ ३

म - ग म - म - ग - म ग - सा सा
पू ऽ ष्ठ, गी ऽ, वा ऽ, बा ऽ दु, ऊ र, प र
× २ ३ × २ ३

ग म ग म - - - ग - म म म ध -
त र ऽ, र हे, ऽ ऽ, बा ऽ द, लो में, ऽ ऽ
× २ ३ × २ ३

नि ध नि ध - म म ध नि ध नि - सा -
धि र अ, प र, दि न, क र र, है ज्यो, ऽ ति
× २ ३ × २ ३

नि सां नि सां सां गं सां ध ध नि ध ध म -
की तऽ न, वी त, डि त, धु ति ने, ऽ दा, मा ऽ
× २ ३ × २ ३

ग ग म ग सा ध नि सा म म - -
मां ऽ गी, ऽ ऽ, ऽ ऽ, ऽ प्रि य, ऽ ऽ
× २ ३ × २

बाकी सभी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग-मालकौंस" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध किया गया है। यह राग "भैरवी - थाट" से उत्पन्न

होता है इसमें गंधार, धैवत व निषाद स्वर कोमल होते हैं बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं। इसका गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर है। इस राग में ध्रुवपद व ख्याल की गायकी अधिक दिखाई देती है, क्योंकि यह गंभीर प्रकृति का राग है। "ताल रूपक" में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में दो - तीन, दो तीन मात्रायें होती हैं। यह गीत भी संयोग श्रृंगार का है। इस राग के अन्तर्गत आने वाले गीत निम्नलिखित हैं जैसे - (प्रेयसी) "घेर घेर अंग को"[१४७] "प्रगल्भ प्रेम"[१४८] (प्रिया से) "मेरे इस जीवन की - है तू सरस साधना कविता"[१४९] इत्यादि।

३०- "नयनों में हेर प्रिय"[१५०]

(राग - रागेश्री) (ताल - चौताल)

(स्थाई)

सा	सा	ध	-	म	-	ग	म	रे	-	सा	-
न	य,	नों	ऽ,	में	ऽ,	हे	ऽ,	र	प्रि,	ये	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	रे	ध	नि	सा	सा	सा	सा	ग	ग	म	म
मु	फे,	तु	म,	ने	ये,	व	च,	न	दि,	ये	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	ग	म	नि	ध	नि	सां	-	सां	सां	सां	सां
तु	म्ही,	ऽ	ह,	द	य,	के	ऽ,	सिं	हा,	स	न
×		०		२		०		३		४	

नि	ध	नि	सां	गं	गं	गं	गं	गं	मं	रें	सां
म	हा,	ऽ	रा,	ऽ	ज,	हो	ऽ,	त	न,	के	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सां सां नि नि ध ध ध नि ध म ग ग
म न, के ऽ, मै ऽ, रे ऽ, म र, णा ऽ
× ० २ ० ३ ४

नि ध़ नि सा - - ग ग म - ध म
आँ ऽ, रे जी, ऽ ऽ, व न, कै ऽ, ऽ ऽ
× ० २ ३ ४

ग - म ध ध नि सां - नि ध म ग
क ऽ, ऽ र, ऽ णा, जा ऽ, म पि, ये ऽ
× ० २ ० ३ ४

अन्तरा

म ग म ध ध ध सां - सां सां सां सां
मे रि, वी णा, ऽ के, ता ऽ, रो ऽ, में ऽ
× ० २ ० ३ ४

ध ध नि सां - सां गं मं रें रें सां सां
बं धँ, हु ए, ऽ हो, भं ऽ, का रों, में ऽ
× ० २ ० ३ ४

सां सां नि नि ध ध ग म रे रे सा सा
उ र, के ऽ, ही रों, के ऽ, हा रों, में ऽ
× ० २ ० ३ ४

ध़ नि सा ग म ध सां नि ध म ग म
ज्यों ऽ, ति ऽ, अ पा, कु रि लि ऽ, ये ऽ
× ० २ ० ३ ४

बाकी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग रागेश्री" में तथा "ताल चौताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग "काफी" थाट से उत्पन्न होता

है। इसमें दोनों निषाद लगाये जाते हैं। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसमें पंचम स्वर तो बिल्कुल नहीं लगता और आरोह में रिषभ भी नहीं लगाया जाता। ध – म की संगति इसमें बहुत सुन्दर मालूम होती है। अन्तरांग में बागेश्री का आभास होता है किन्तु पूर्वांग में आया हुआ तीव्र गांधार बागेश्री का भ्रम हटा देता है क्योंकि बागेश्री में कोमल गंधार लगता है।

"ताल – चौताल" में बारह मात्रायें व छ: भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो – दो मात्रायें होती हैं। यह गीत वियोग श्रृंगार का है। "सोचती अपलक आप खड़ी" [१५१] "लिखती सब कहते" [१५२] "तुम छोड़ गये द्वार" [१५३] "वे गये असह दु:ख भर" [१५४] "कितने बार पुकारा" [१५५] "चाल ऐसी मत चलो" [१५६] इत्यादि गीतों को इस राग में निबद्ध किया जा सकता है।

३१ – "तुम्हीं गाती हो अपना गान" [१५७]

(राग मारू बिहाग) (ताल – केहरवा)

स्थाई

नि	नि	सा	सा	ग	–	ग	ग	ग	ग	म	ग	रे	–	सा	–
तु	म्हीं	गा	ऽ,	ती	ऽ	हो	ऽ,	ऽ	अ	प	ना,	गा	ऽ	ऽ	न
×				०				×				०			

–	प	प	मं	प	–	प	प	प	प	ग	मं	ग	–	–	ग
ऽ	व्य	ऽ	र्थ,	में	ऽ	पा	ऽ,	ता	ऽ	स	ऽ,	न्मा	ऽ	ऽ	न
×				०				×				०			

अन्तरा

ग	मं	प	ध	ध	ध	ध	ध	–	ध	प	नि	ध	–	–	–
मे	रा	प	त,	झ	ड़	ह	रा,	ऽ	हृ	द	य,	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

मं प सां गं सां गां सां नि नि ध ध प प म म ग

ह र प ऽ, चाँ ऽ के ऽ, म मं र के, सु ख क र,

× 0 × 0

ग ध ध ध ध ध ध प प नि ध नि प ध प प

तु म्हीं ऽ सु, ना ऽ ती ऽ, हो ऽ नू ऽ, त न स्व र

× 0 × 0

सां नि नि ध ध प प मं प ध प मे ग रे सा -

भ र दे ऽ, तो ऽ हो ऽ, प्रा ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ण

× 0 × 0

अन्तरा

ग प सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां सां

मे रा दुः ख, अ र ऽ ण्य, कि स ल य, द ल ऽ ऽ

× 0 × 0

नि - नि नि नि नि नि नि नि नि नि ध नि ध प प

ज्वा ऽ ल ज, ली ऽ का ऽ, ली ऽ तु म, कों ऽ य ल

× 0 × 0

ध - ध ध ध ध ध ध प नि ध नि प ध प प

दै ऽ न्य डा, ऽ ल प र, बै ऽ ठी कु, प्र ति फ ल

× 0 × 0

सां सां सां नि नि ध ध प प ध प मं ग रे सा -

सु ना क र, ही ऽ हो ऽ, ता ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ न

× 0 × 0

अन्तरा

ग प सां सां | सां सां सां सां | सां सां सां सां | सां सां सां सां
भ्र म रों धु, | लि ऽ धू स, | रि त न भ, | त न ऽ ऽ
× | 0 | × | 0

नि - नि नि | नि नि नि नि | नि नि नि ध | नि ध प प
तु ऽ म श, | शि ऽ क ला, | कि र णा द्दृ, | ग चु म्ब न
× | 0 | × | 0

ध - ध ध | ध ध ध ध | प नि ध नि | प ध मे प
ज्ञा ऽ न त, | न्त्र ऽ तु म, | ज ग अ जा, | ऽ न म न
× | 0 | × | 0

सां सां सां नि | नि ध ध प | प ध प में | ग रे सा -
श व शि व, | श क्ति क्ति भ्र | म ता ऽ ऽ, | ऽ ऽ ऽ न
× | 0 | × | 0

यह गीत "राग" मारू - बिहाग" में तथा "ताल - केहरवा" में निबद्ध किया गया है। वैसे यदि यह गीत सम्पूर्ण रूप से सुखकर होता तो इसे "बहार" में भी निबद्ध किया जा सकता था परन्तु इस गीत में सुख और दुःख दोनों का सम्मिश्रण है। इसलिये इस प्रकार के गीतों को "मारु बिहाग" में निबद्ध किया जाता है। यह राग "खमाज" थाट से उत्पन्न हुआ है।

"ताल - केहरवा" में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार - चार मात्रायें होती हैं।

३२- "आज मन पावन हुआ है" [१५]

(राग - ललित) (ताल - तीव्रा)

स्थाई

ग में ग | रे रे नि रे | म म म | ये - | म -
आ ऽ ज, | म न, पा ऽ, | व न हु, | आ ऽ, | है ऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

ध - ध ध - ध नि मं ध मं म - ग -
जै ऽ ठ, मैं ऽ, सा ऽ, व न हु, आ ऽ, है ऽ
x 2 3 x 2 3

अन्तरा

ध ध नि म म ध ध सां - सां रें रें सां -
अ भी ऽ, त क, दृ ग, ब ऽ द, दो ऽ, ये
x 2 3 x 2 3

रें रें - सां - सां सां नि रें नि मे ध म म
धु ले ऽ, उ र, के ऽ, छ ऽ न्द, थे ऽ, ये S
x 2 3 x 2 3

नि नि रें ग - गं रें रें गं रें सां - सां -
स ज ल, हो ऽ, क र, ब ऽ न्द, थे ऽ, ये S
x 2 3 x 2 3

ध नि ध ध ध ध ध म ध म म - ग -
रा ऽ म, अ हिं, रा ऽ, व न हु, आ ऽ, है ऽ
x 2 3 x 2 3

अन्तरा

सां सां सां सां - सां - नि नि रें नि - ध -
क टा ऽ, था ऽ, जो ऽ, प टा ऽ, र ह, क र
x 2 3 x 2 3

ध ध ध नि - रें - नि रें गं सां सां सां सां
फ टा ऽ, था ऽ, जो ऽ, स टा ऽ, र ह, क र
x 2 3 x 2 3

रें	रें	मं	मं	-	सं	-	नि	नि	रें	नि	नि	ध	ध
ड़	टा	ऽ,	था	ऽ,	जो	ऽ,	ह	टा	ऽ,	र	ह,	क	र
×			२		३		×			२		३	

ध	ध	ध	नि	-	ध	-	मं	ध	मं	म	-	ग	-
अ	च	ल	था	ऽ,	धा	ऽ,	व	न	हु,	आ	ऽ,	है	ऽ
×			२		३		×			२		३	

यह गीत "राग- ललित" में तथा "ताल - तीव्रा" में निबद्ध किया गया है। "राग ललित" "मारवा" थाट से उत्पन्न होता है। इसमें कोमल रिषभ व दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है। इस राग में धम धम, यह स्वर प्रयोग तथा "नि रे ग म मं म ग, यह स्वर समुदाय राग की विशेषता को व्यक्त करते हैं। इसका गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है। इस गीत के दोनों अन्तरों में दोनों धैवत का अलग अलग प्रकार से प्रयोग किया गया है जिससे इसमें नवीनता दिखाई देती है।

"ताल - तीव्रा" में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में दो - तीन, दो - तीन मात्रायें होती हैं।

३३- "प्यासे तुमसे भरकर हर से"[१५६]

(राग - गौड़ मल्हार) (ताल - त्रिताल)

स्थाई

ग	रे	ग	म	ग	ग	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	प	म	ग
प्या	ऽ	से	ऽ,	तु	म	से	ऽ,	भ	र	क	र,	ह	र	से	ऽ
×				२				०				३			

म	रे	प	प	प	प	म	प	ध	सां	ध	प	म	प	म	ग
सा	ऽ	व	न,	घ	न	प्रा	ऽ,	णो	ऽ	में	ऽ,	ब	र	से	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	प	प	प	ध	ध	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
उ	न	यी	ऑं,	खों	ऽ	में	ऽ,	ऽ	श्या	म	घ,	टा	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ध	ध	ध	ध	सां	सां	रें	रें	सां	निं	ध	सां	नि॒	-	प	-
वि	ऽ	द्यु	त,	की	ऽ	न	म,	न	हैं	ऽ	छ,	टा	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ध	ध	रें	रें	मंमं	मं	रें	सां	सां	सां	सां	सां	ध	नि॒	प	-
फै	ली	ह	रि,	याऽ	ऽ	ली	ऽ,	अ	टा	ऽ	अ,	टा	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

प	प	प	प	सां	-	ध	प	प	-	प	प	म	प	म	ग
अं	ऽ	गो	ऽ,	के	ऽ	रं	ऽ,	गो	ऽ	के	ऽ,	प	र	से	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

प	प	प	प	ध	ध	नि॒	नि॒	सां	सां	गं	सां	सां	रें	सां	-
अ	वि	र	त,	रि	म	झि	म,	बी	ऽ	णा	ऽ,	डी	म	डी	म
×				२				०				३			

ध	ध	ध	ध	सां	गं	रें	रें	-	सां	ध	सां	नि॒	-	प	प
प्र	ति	ध्व	न,	रै	ऽ	ल	ती,	ऽ	प	व	न,	प	ऽ	श्चि	म
×				२				०				३			

ध	रें	रें	रें	मं	गंमं	रें	सा	सा	ध	सां	रें	सां	-	ध	प
मृ	दं	ऽ	ग,	वां	ऽऽ	द	न,	ग	ति	अ	वि,	कृ	ऽ	त्रि	म
×				२				०				३			

प	-	सां	-	ध	प	प	प	प	-	प	प	म	प	म	ग
जी	ऽ	के	ऽ,	भी	ऽ	त	र,	से	ऽ	बा	ऽ,	ह	र	से	ऽ
x				२				०				३			

यह गीत "राग - गौड़ मल्हार" में तथा "ताल - त्रिताल" में निबद्ध किया गया है। इस राग के बारे में दो मत हैं। एक मत इस राग को काफी थाट का मानता है तो दूसरा मत इसे खमाज थाट का मानता है। ख्याल गायक तीव्र गांधार लेते हैं और ध्रुपद गायक कोमल गांधार लगाते हैं, किन्तु ऐसा करने से इसे मियांमल्हार से बचाना कठिन हो जाता है। अत: इसमें सदैव शुद्ध गांधार ही लेना चाहिये। यह मौसमी राग है इसलिये इसके गीतों में प्राय: वर्षा ऋतु का वर्णन मिलता है। "ताल - त्रिताल" में कुल सोलह मात्रायें तथा चार भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार - चार मात्रायें विभाजित होती हैं। इसके अन्तर्गत आने वाले गीत निम्नलिखित हैं, जैसे - "घिक मनन्मवमान, गरजे बदरवा"[१६०] "घिक मद, गरजे बदरवा"[१६१] "घन गर्जन से भर दो वन"[१६२] इत्यादि।

३४- "राम के हुए तो बने काम"[१६३]

(राग - रागेश्री) (ताल - दादरा)

स्थाई

ध	-	नि	सा	-	सा	सा	-	-	सा	सा	सा
रा	ऽ	म,	के	ऽ	हु,	ए	ऽ	ऽ,	तो	ऽ	ऽ
x			०			x			०		
रे	रे	म	ग	-	सा	रे	-	-	रे	-	-
ब	नै	ऽ,	का	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	म
x			०			x			०		
म	म	म	म	म	म	ग	ग	ग	रे	रे	रे
सां	ऽ	व,	रे	ई	ऽ,	गा	ऽ	ऽ,	रे	ऽ	ऽ
x			०			x			०		

सा - ग रें - नि सा सा सा नि ध नि
ध न ऽ, धा ऽ न, धा ऽ ऽ, ऽ ऽ म
x 0 x 0

सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा
ध न ऽ, धा ऽ न, धा ऽ ऽ, ऽ ऽ म
x 0 x 0

अन्तरा

म - म म म म म म म म म म
पू ऽ छा, ऽ ऽ ऽ, ज ग नै, ऽ ऽ ऽ
x 0 x 0

ध ध ध ध - म ध - ध ध - -
व ह ऽ, रा ऽ म, कौं ऽ न, है ऽ ऽ
x 0 x 0

नि - - ध - ध सां नि नि नि नि नि
बाँ ऽ ऽ, ली ऽ वि, शु ऽ ऽ, द्वि ऽ ऽ
x 0 x 0

सां - सां सां नि रें सां - - सां - -
जो ऽ र, ही ऽ ऽ, माँ ऽ ऽ, ऽ ऽ न
x 0 x 0

रें रें रें रें रें रें गं - - सां - -
व ह जि, स कै ऽ, दू ऽ ऽ, ऽ ऽ न
x 0 x 0

सां सां सां सां निं रें सां - - सां - -
न ख्यो ऽ, ऽ ऽ हू, पौं ऽ ऽ, ऽ ऽ न
x 0 x 0

मां	सां	सां	नि	नि	नि	ध	ध	ध	म	म	म
जो	ऽ	ऽ,	वे	ऽ	ऽ,	दो	ऽ	ऽ,	मे	ऽ	है
x			0			x			0		

म	-	ध	म	-	म	म	-	-	ग	-	-
स	ऽ	त्य,	मा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ,	म	ऽ	ऽ
x			0			x			0		

पूर्व के अनुसार "सांवरे सारे धन, धान, धाम"। यह गीत राग "रागेश्री" में तथा ताल "दादरा" में निबद्ध किया गया है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसके उत्तरांग में बागेश्री का आभास होता है किन्तु पूर्वांग में आया हुआ तीव्र गांधार बागेश्री का भ्रम हटा देता है क्योंकि बागेश्री में कोमल गंधार लगता है। ताल "दादरा" में छ: मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में तीन तीन मात्रायें होती हैं।

३५ - "दु:खता रहता है अब जीवन" [१६४]

(राग - पूरियाधनाश्री) (ताल रूपक)

स्थाई

नि	रे	ग	ग	ध	मे	-	ग	रे	सा	नि	रे	सा	-
दु	ख	ता,	र	ह,	ता	ऽ,	है	अ	ब,	जो	ऽ,	व	न
x			२		३					२		३	

पप	प	प	मं	ध	प	-	मं	प	मंग	मं	रे	ग	-
पत	फ	ड़,	का	ऽ,	जे	ऽ,	सा	ऽ	वन,	उ	प,	व	न
x			२		३		x			२		३	

अन्तरा

मंमं ग ग मं मं ध ध सां - सां नि रें सा -
भर झ र , क र , जि त , ने ऽ प , व न , ब ल
× २ ३ × २ ३

निनि नि ध नि नि नि नि ध नि रें नि ध प प
कर ग यें , रि ऽ , भत त , तु का ऽ , त रु , द ल
× २ ३ × २ ३

सां - सां रें सां - सां सां नि ध नि ध प प
है ऽ चि , न्ह शे , ऽ ष , के व ल , स ऽ , म्ब ल
× २ ३ × २ ३

प प प मं ध प - मंप मं ग मं रे ग -
जि न से , ल ह , रा ऽ , याऽ था ऽ , का ऽ , न ना
× २ ३ × २ ३

अन्तरा

ध - ध ध - ध ध मं मं धनि नि ध प प
ड़ा ऽ लि , याँ ऽ , ऽ ब , हु त सीऽ , सु ख , ग ई
× २ ३ × २ ३

मंमं मं ध सां सां सां - नि ध नि रें नि ध प
उन की न , प त्र , ता ऽ , हु ई ऽ , न ई , न ई ,
× २ ३ × २ ३

रें रें रें सां - सां - नि ध नि रें नि ध प
बा धे से , ज्या ऽ , दा ऽ , घ टा ऽ , ऽ वि , ट प
× २ ३ × २ ३

प - प धु - प प मं प ग मं रे ग ग
बी ऽ ज , कौ ऽ , ऽ च , ला हु है , ज्यो ऽ , दा णा
× २ ३ × २ ३

बाकी अन्तरे इसी प्रकार से हैं। यह गीत "राग-पूरियाधनाश्री" में तथा "ताल रूपक" में निबद्ध किया गया है। यह राग "पूर्वी" थाट से उत्पन्न होता है इसमें रिषभ व धैवत कोमल है व मध्यम तीव्र है। इसका गायन समय सायंकाल है। यह राग पूर्वी से मिलता जुलता है किन्तु पूर्वी में दोनों मध्यम हैं और इसमें तीव्र मध्यम ही है, इस भेद से यह राग पूर्वी से बचा लिया जाता है। इस राग में म रे ग तथा रे निधप ये स्वर समुदाय, राग-दर्शक हैं। यह गीत वियोग-श्रृंगार का है। इस प्रकार के गीतों को इस राग में निबद्ध किया जा सकता है जैसे - "दुख के सुख जियो, पियो ज्वाला"[१६५], "मरा हूं, हजार-मरण"[१६६] "नहीं रहते प्राणों में प्राण"[१६७], "सुख का दिन डूबे डूब जाये"[१६८] "हारता है मेरा मन विश्व के समर में जब"[१६६] "हार गया ज्यों मैं उस पार गया"[१७०] इत्यादि।

"ताल - रूपक" में सात मात्रायें तथा तीन भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें होती हैं।

३६ - "मुझे स्नेह क्या मिल न सकेगा"[१७१]

(राग - भैरवी) (ताल - केहरवा)

स्थाई

सा	ग	ग	प	प	ध	प	-	ग	रे	ग	म	रे	ग	रे	सा
मु	झे	ऽ	स्ने,	ऽ	ह	क्या	ऽ,	मि	ल	न	स,	के	ऽ	गा	ऽ
x				0				x				0			
सा	-	रे	ग	-	ग	म	म	प	ध	नि	सां	ध	नि	ध	प
स्त	ऽ	ब्ध	द,	ऽ	ग्ध	मे	रे,	म	रू	ऽ	का,	ऽ	त	रू	ऽ
x				0				x				0			
सां	नि	ध	प	नि	ध	प	म	ध	प	म	ग	रे	ग	रे	सा
क्या	ऽ	क	रू,	णा	ऽ	क	र,	खि	ल	न	स,	के	ऽ	गा	ऽ
x				0				x				0			

अन्तरा

प प म ग | प प प प | ध - ध ध | प ध म म
ज ग दू ऽ, | च्छि त का ऽ, | बी ऽ ज न, | ऽ ष्ट क र
× | 0 | × | 0

सां सां ध सां | - सां सां सां | रें रें - नि | - ध सां सां
पु ल क स्पं, | ऽ द भ र, | खि ला ऽ न, | ऽ ष्ट क र
× | 0 | × | 0

रें गं - रें | गं - गं गं | रें गं पं मं | रें गं रें सां
कृ पा ऽ म, | मी ऽ र णा, | ब ह ने ऽ, | प र ख्या ऽ
× | 0 | × | 0

सां नि ध प | नि ध प म | ध प म म | रे ग रे सा
क ठि ऽ न | द द थ, प | द दि न न | स के जा ऽ
× | 0 | × | 0

अन्तरा

ध म म - | ध ध नि नि | सां - सां नि | नि रें सां -
मे रे रे ऽ, | दु ख का | भा ऽ र मु, | क र हा ऽ
× | 0 | × | 0

ध नि सां रें | गं - रें गं | रें रें रें सां | नि सारें सां -
इ सी लि ये, | ऽ ऽ प्र ति, | च र णा रू, | क र हा ऽ
× | 0 | × | 0

गं - गं रें | गं - गं गं | सांसां रें मं | रें गं रें सां
स्प ऽ र्श तु, | म्हा ऽ रा ऽ, | मि ल ने ऽ | प र ख्या ऽ
× | 0 | × | 0

सां	नि	ध	प	नि	ध	प	म	ध	प	म	म	ग	-	रे	सा
म	हा	ऽ	भा,	ऽ	र	य	ह,	मि	ल	न	स,	के	ऽ	गा	ऽ
×				०				×				०			

यह गीत " राग - भैरवी " में तथा " ताल - केहरवा " में निबद्ध किया गया है। यह राग भी " भैरवी " थाट से ही उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम शुद्ध व शेष स्वर कोमल होते हैं। इसका गायन समय प्रात:काल है। यह गीत वियोग-श्रृंगार के अन्तर्गत आता है। जब इस प्रकार का दु:ख मय वर्णन होता है तब ऐसे गीतों को इस राग में निबद्ध किया जाता है। इस प्रकार के गीत निम्नलिखित हैं जैसे - " छोड़ दो जीवन यों न मलो "[१७२], " तुम छोड़ गये द्वार तब से यह सूना संसार "[१७३], " बादल रे, जी तरसे "[१७४], " जी में न जागे जो विकल प्यास "[१७५], " प्यार की थाती यह पाती प्रिय आंखों में बरसाती "[१७६], " यह जी न भरा तुमसे मेरा "[१७७], " मन हमारा मग्न दु:ख को "[१७८], " भव अर्णव की तरणी तरुणा "[१७९], " वे कह जो गये कल आने को "[१८०], " ये दु:ख के दिन काटे हैं जिसने "[१८१] इत्यादि।

" ताल - केहरवा में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार-चार मात्रायें होती हैं।

३७- " बांधों न नाव इस ठांव बन्धु "[१८२]

(राग वैरागी - भैरव) (ताल - केहरवा)

स्थाई

सा	सा	रे	म	म	म	रे	सां	रे	रे	रे	रे	नि	रे	सा	-
बां	ऽ	धों	न,	ना	ऽ	व	इ,	स	ठां	ऽ	व,	बं	ऽ	न्धु	ऽ
×				०				×				०			
म	-	प	नि	नि	-	प	म	रे	रे	रे	रे	नि	रे	सा	-
पू	ऽ	छे	गा,	सा	ऽ	रा	ऽ,	गां	ऽ	ऽ	व,	बं	ऽ	न्धु	ऽ
×				०				×				०			

अन्तरा

प नि प म	म म म म	प प नि नि	प सां नि नि
य ही घा ट,	ब ऽ ही ऽ,	जि स प र,	हं स क र
x	0	x	0
प प नि नि	रें सां सां सां	नि - - -	प पनि म म
व ह क भी,	न हा तो ऽ,	थी ऽ ऽ ऽ,	घं सऽ क र
x	0	x	0
सां ~~सां~~ सां -	रें सां नि प	नि सां निप -नि	नि नि नि नि
आं ऽ से ऽ,	र ह जा ऽ,	ता ऽ था ऽ,	फं स क र
x	0	x	0
म म प नि	नि - नि प	रें रें रें रें	नि रें सा -
कं प ते ऽ,	थे ऽ दो नों,	पां ऽ ऽ व,	ब ऽ न्धु ऽ
x	0	x	0

अन्तरा

प म म म	म म म म	प प नि नि	प सां नि -
व ह हं सी,	ऽ ब हु त,	कु छ क ह,	तो ऽ थी ऽ
x	0	x	0
प प नि नि	सां सां सां सां	रें सां नि प	नि नि नि नि
फि र भी ऽ,	अ प ने ऽ,	मैं ऽ र ह,	ती ऽ थी ऽ
x	0	x	0
प प नि नि	रें रें रें रें	रें सां नि प	नि नि नि नि
स ब की ऽ,	सु न तो ऽ,	थी ऽ स ह,	ती ऽ थी ऽ
x	0	x	0

म	-	प	नि	नि	-	प	म	रे	रे	रे	रे	नि	रे	सा	-
दे	ऽ	ती	ऽ,	थी	ऽ	स	ब,	के	ऽ	दाँ	व,	ब	ऽ	न्धु	ऽ
×				०				×				०			

यह गीत "राग वैरागी-भैरव" में तथा "ताल - केहरवा" में निबद्ध किया गया है। यह राग "भैरव - थाट" से उत्पन्न होता है। इसमें ऋषभ व निषाद स्वर कोमल होते हैं तथा शेष स्वर शुद्ध होते हैं। इसमें यह विशेषता है कि धैवत और गांधार वर्ज्य हैं।

ताल - केहरवा" में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में चार - चार मात्रायें होती हैं।

३८- "विपदा हरण हार, हरि है करो पार" [१८३]

(राग - भटियार) (ताल - झपताल)

स्थाई

सा	सा	ध	-	नि	ध	प	म	-	म
वि	प,	दा	ऽ	ह,	र	णा,	हा	ऽ	र
×		२			०		३		
म	रे	म	-	प	ग	रे	सा	-	सा
ह	रि,	है	ऽ	क,	रो	ऽ,	पा	ऽ	र
×		२			०		३		
सा	-	सा	म	-	प	प	प	ध	प
प्रा	ऽ,	णा	के	ऽ,	जो	ऽ,	ऽ	कु	छ
×		२			०		३		
म	प	ध	नि	ध	ध	म	प	-	प
च	रा,	ऽ	च	र,	तु	म,	सा	ऽ	र
×		२			०		३		

अन्तरा

ध	म	प	-	ध	सां	-	सां	-	सां
तु	म्ही,	अ	ऽ	वि,	ना	ऽ,	शी	ऽ	वि
×		२			०		३		
ध	ध	सां	-	रें	सां	-	ध	-	प
हं	ग,	व्यो	ऽ	म,	के	ऽ,	दे	ऽ	श
×		२			०		३		
ध	म	प	प	ध	ध	ध	प	-	प
प	रि,	नि	त	अ,	प	रि,	मा	ऽ	ण
×		२			०		३		
म	-	प	ध	प	प	ध	रें	-	सा
मैं	ऽ,	तु	म	ऽ,	हु	ए,	शे	ऽ	ष
×		२			०		३		
रें	-	रें	रें	रें	पं	गं	रें	सां	सां
सृ	ऽ,	ष्टि	मैं	ऽ,	हु	ऽ,	श्य	र	स,
×		२			०		३		
रें	-	रें	सां	सां	ध	म	प	-	प
रू	ऽ,	प	भो	ऽ,	ज	न,	बे	ऽ	श,
×		२			०		३		
म	-	म	म	म	प	ध	म	प	प
फें	ऽ,	ल	क	र,	सि	मि,	ट	क	र
×		२			०		३		
ध	ध	म	-	म	ध	प	रें	-	सा
तु	म्ही,	हो	ऽ	ऽ	नि	ऽ,	धा	ऽ	र
×		२			०		३		

अन्तरा

ध	ध	म	प	ध	सां	-	सा	-	-
ब	हु,	वि	ध	तु,	म्हा	ऽ,	रा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

ध	ध	सां	-	रें	सां	-	ध	-	प
उ	पा,	ख्या	ऽ	न,	गा	ऽ,	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

ध	ध	ध	-	ध	ध	म	प	-	प
फि	र,	मी	ऽ	क,	हा	ऽ,	अ	ऽ	न्त
×		२			०		३		

ध	प	ग	-	प	ग	रे	सा	-	-
ज	ब,	भी	ऽ	न,	पा	ऽ,	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

रें	-	रें	रें	-	सां	ध	सां	-	सां
मू	ऽ,	तं	हो	ऽ,	या	ऽ,	स्फू	ऽ	र्त,
×		२			०		३		

सां	सां	रें	सा	सां	ध	-	प	-	-
तु	म,	कु	छ	न,	आ	ऽ,	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

म	म	म	-	म	प	-	प	-	प
प	दो,	प	ऽ	र,	द	ऽ,	ण्ड	ऽ	पु
×		२			०		३		

ध	प	ग	प	-	रे	-	सा	-	सा
णा	ऽ,	म	के	ऽ,	सं	ऽ,	भा	ऽ	र
×		२			०		३		

यह गीत राग "भटियार" में तथा ताल "झपताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग "मारवा" थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें रिषभ कोमल है व शेष स्वर शुद्ध होते हैं इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है। इसका गायन समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है।

ताल "झपताल" में दस मात्रायें तथा चार भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग में दो-तीन, दो-तीन मात्रायें विभाजित होती हैं। यह गीत भक्ति प्रधान है। "दु:ख हर दे जल शीतल भर दे"[१८४] "दुरित दूर करो नाथ"[१८५] "विपदा भय निवारण करेगा वही गुन"[१८६] इत्यादि गीतों को भी इस राग में निबद्ध किया जा सकता है।

३६- "स्नेह की रागिनी बजी"[१८७]

(राग - तोड़ी) (ताल केहरवा)

स्थाई

सा
स्ने

- रे नि - सा - - - - सा सा रे ग - - ध
ऽ ह की ऽ, रा ऽ ऽ ऽ, ऽ गि नी ब, जी ऽ ऽ दे
0 × 0 ×

मं ध मं ग ग ग रे ग - - - रे सा सा सा ध
ऽ ह की ऽ, सु र ब हा, ऽ ऽ ऽ र, प र ऽ व
0 × 0 ×

ध ध मे - मं ध - - - - - मं धनि सां - नि
र वि ला ऽ, सि नी ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ स, जीऽ ऽ ऽ प्रि
0 × 0 ×

सां नि ध ध - मे रे ग रे - रे - ग रे सा -

य कै ऽ अ, ऽ श्रु हा ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ र प र

० × ० ×

अन्तरा

ध

न

मे मे ध मे मे धनि सां - सां - सां - नि ध - सां

य न हीं ऽ, ग येऽ ऽ ऽ, है ऽ ऽ ऽ, वै ऽ ऽ अ,

० × ० ×

नि सां नि ध मे ध मे ग रे ग रे सा सा - सा -

ध न जि न, का ऽ ऽ ओं, ऽ ऽ ग या, ऽ ऽ ऽ सु

० × ० ×

रे नि - सा - - - - - - सा रे ग - - ध

ख कै ऽ कै, ऽ श म न, कै ऽ लि ऽ, यै ऽ ऽ आ

० × ० ×

मे ध मे ग ग ग रे ग - - - रे सा सा सा सा

यै ऽ है ऽ, अ मि कै ऽ धा ऽ ऽ र, प र ऽ ऽ

० × ०

अन्तरा

ध

ओ

- ध ध - मे - - मे मे मे - मे ध - - ध

ऽ स सें ऽ, धु ल ऽ ग, ई ऽ ऽ क, लो ऽ ऽ र

० × ० ×

मे - मे - ध नि सा सां सां - - नि ध - - ध

वि ऽ की ऽ, आँ ऽ ख खु, ल ऽ ऽ ग, ई ऽ ऽ त

० × ० ×

ध	ग	रे	-	रें	रें	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	-	-	सां
हू	ण	मु	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ	हूँ,	ना	ऽ	ऽ	ज,	गी	ऽ	ऽ	वि
०				×				०				×			
-	सां	नि	ध	मं	मं	मं	मं	ध	मं	रे	ग	रे	सा	-	-
ऽ	श्व	के	ऽ,	ता	ऽ	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽ	र,	प	र	ऽ	स्ने
०				×				०				×			

यह गीत राग " तोड़ी " में तथा ताल " केहरवा " में निबद्ध किया गया है। यह राग " तोड़ी " थाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें रिषभ, गांधार तथा धैवत कोमल तथा मध्यम तीव्र होता है। इसका गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है। ताल " केहरवा " में आठ मात्रायें तथा दो भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में चार चार मात्रायें होती हैं। यह गीत संयोग श्रृंगार का है। इस राग के अन्तर्गत निम्नलिखित गीतों को भी लिया जा सकता है जैसे - " चाहते हो किसको सुन्दर "[१८८] " वह कितना सुख जब मैं केवल "[१८९] " हुआ प्रात प्रियतम तुम जावोगे चले "[१९०] इत्यादि।

४०- " मार दी तुमने पिचकारी "[१९१]

(राग - काफी) (ताल - त्रिताल)

स्थाई

रे	म	नि	प	ग	रे	म	प	प	-	-	ध	म	प	ग	रे
मा	ऽ	र	दी,	तु	मे	ऽ	पि,	च	का	ऽ	री,	कौ	ऽ	न	री
०				३				×				२			
-	ध	ध	ध	पध	निसां	निध	-	म	प	धप	ग	-	रे	सा	
ऽ	रं	गी	छ,	बिऽ	ऽऽ	वारी,	ऽ	कौ	ऽ	नऽ,	री	ऽ	ऽ	ऽ	
०				३				×				२			

अन्तरा

ध म प ध | सां - - - | ध ध सां रें | नि नि ध प
फू ल सी ऽ, | दे ऽ ऽ ह, | छु ती ऽ ऽ, | मा ऽ री ऽ
० | ३ | × | २

ध ध ध ध | ध नि नि ध | म प ध प | ग ग रे सा
हू ल की ऽ, | तु ल सी ऽ, | सां ऽ ऽ व, | री ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

सा रे म प | प - ध ध | सां - - नि | ध प ग रे
रे णु ओं भ, | ली ऽ सु कु, | मा ऽ ऽ ऽ, | ऽ री ऽ ऽ
० | ३ | × | २

अन्तरा

ध म प ध | सां - - - | ध ध सां रें | नि नि ध प
मु स का ऽ, | दी ऽ औ र, | आ ऽ भा ऽ, | ला ऽ दी ऽ
० | ३ | × | २

ध ध ध ध | ध नि नि ध | म प ध प | ग ग रें सा
उ र उ र, | मैं ऽ गूँ ज, | ऽ उ ठा ऽ, | दी ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

सा रे म प | प - ध ध | सां - - नि | ध प ग रे
फि र र ही, | ला ऽ ज की, | मा ऽ ऽ ऽ, | ऽ री ऽ ऽ
० | ३ | × | २

मौन री रंगी छवि प्यारी कौन री, मार दी तुझे पिचकारी - - - -

यह गीत राग "काफी" में तथा ताल "त्रिताल" में निबद्ध किया गया है। यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुआ है इसमें गंधार व निषाद स्वर कोमल

होते हैं तथा शेष स्वर शुद्ध होते हैं इसका गायन समय मध्य रात्रि है।

ताल " त्रिताल " में सोलह मात्रायें तथा चार चार मात्रायें होती हैं। इस गीत में होली का वर्णन किया गया है। " नयनों के डोरे लाल गुलाल भरे खेली होली "[१६२] " आंख अधर रंग भर गए हैं पिचकारी चली लली के अंग आंगन "[१६३] इत्यादि गीतों को भी इस राग में निबद्ध किया जा सकता है।

उपर्युक्त विश्लेषण और विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि निराला जी के गीतों में शास्त्रीय - संगीतात्मकता का पूर्ण निर्वाह हुआ है। शास्त्रीय - संगीत की कसौटी पर उनके गीत पूर्ण रूप से सफल हैं। कोई भी गायक उन्हें सफलता के साथ गाकर प्रस्तुत कर सकता है। गाने पर गीतों का सौन्दर्य और भी निखर उठता है। यहाँ प्रस्तुत सभी गीतों को परिशिष्ट में दिया गया है।

सान्दर्भ ग्रन्थ

			पृ०
१-	निराला :	गीतिका :	३
२-	निराला :	अनामिका :	३३
३-	निराला :	गीतिका :	७३
४-	निराला :	गीतिका :	५
५-	निराला :	परिमल	४३
६-	निराला :	गीतिका :	१०
७-	निराला :	गीतिका :	५१
८-	निराला :	अर्चना :	४६
९-	निराला :	अर्चना :	४८
१०-	निराला :	अर्चना :	८१
११-	निराला :	अर्चना :	४७
१२-	निराला :	अर्चना :	८६
१३-	निराला :	अर्चना :	९३
१४-	निराला :	परिमल :	७४
१५-	निराला :	परिमल :	८८
१६-	निराला :	परिमल :	१७५
१७-	लॆ० वसन्त :	संगीत विशारद :	२०९
१८-	निराला :	गीतिका :	१५
१९-	निराला :	गीतिका :	५०
२०-	निराला :	परिमल :	१०२
२१-	निराला :	नये पत्ते :	९६
२२-	निराला :	सांध्य काकली :	२५
२३-	निराला :	अर्चना :	३२
२४-	निराला :	सांध्य काकली :	५०
२५-	शिराला :	सांध्य काकली :	५७
२६-	निराला :	सांध्य काकली :	६०

			पृ०
२७-	निराला :	नये पत्ते	१०४
२८-	ले० वसंत :	संगीत विशारद	२१०
२९-	निराला :	परिमल :	१९८
३०-	निराला :	गीतिका :	६
३१-	निराला :	गीतिका :	१६
३२-	निराला :	गीतिका :	४०
३३-	निराला :	गीतिका:	५१
३४-	निराला :	गीतिका	७१
३५-	निराला :	अर्चना :	४०
३६-	निराला :	अर्चना :	८६
३७-	निराला	अर्चना :	१२८
३८-	निराला :	गीतगुंज :	३६
३९-	निराला :	आराधना :	४८
४०-	ले० वसंत	संगीत विशारद :	२१६
४१-	निराला :	आराधना :	२०
४२-	निराला :	आराधना :	१२
४३-	निराला :	आराधना :	२४
४४-	निराला :	आराधना :	५१
४५-	निराला :	आराधना :	६२
४६-	निराला :	आराधना :	६१
४७-	निराला :	आराधना :	७०
४८-	निराला :	आराधना :	८०
४९-	निराला :	अर्चना :	३७
५०-	निराला :	अर्चना :	६०
५१-	निराला :	अर्चना :	११६
५२-	निराला :	सांध्य काकली :	६६

			पृ०
५३-	निराला :	सांध्य काकली	७६
५४-	निराला :	गीतिका :	५८
५५-	निराला :	परिमल :	३४
५६-	निराला :	गीतगुंज :	५१
५७-	निराला :	अर्चना :	६४
५८-	निराला :	परिमल :	२६
५९-	निराला :	परिमल :	३०
६०-	निराला :	परिमल :	३२
६१-	निराला :	परिमल :	३४
६२-	निराला :	परिमल :	३६
६३-	निराला :	परिमल :	३८
६४-	निराला :	परिमल :	४०
६५-	निराला :	परिमल :	४२
६६-	निराला :	परिमल :	४५
६७-	निराला :	परिमल :	६२
६८-	निराला :	परिमल :	६८
६९-	निराला :	गीतिका :	२६
७०-	निराला :	गीतिका :	२७
७१-	निराला :	अर्चना	५०
७२-	निराला :	गीतगुंज :	४८
७३-	निराला :	गीतगुंज :	५५
७४-	निराला :	आराधना :	५२
७५-	निराला :	बेला :	६२
७६-	निराला :	बेला :	१७

			पृ०
७७-	निराला:	बेला:	२४
७८-	निराला :	बेला :	२६
७६-	निराला :	बेला :	३२
८०-	निराला :	बेला :	५८
८१-	निराला :	बेला :	६२
८२-	निराला	बेला :	६०
८३-	निराला	गीतगुंज:	२८
८४-	ले० वसंत	संगित विशारद	२१७
८५-	निराला :	बेला :	२३
८८-	निराला :	बेला :	६२
८७-	निराला :	बेला :	६४
८८-	निराला :	बेला :	६५
८६-	निराला :	बेला :	६६
६०-	निराला :	बेला :	६८
६१-	निराला :	बेला :	६०
६२-	निराला :	बेला :	८५
६३-	निराला :	अपरा :	१४४
६४-	निराला :	अपरा :	१६०
६५-	निराला :	अनामिका :	१३८
६६-	निराला :	अनामिका :	८२
६७-	निराला	परिमल :	१७७
६८-	निराला :	परिमल :	१७६
६६-	निराला :	परिमल :	१८२
१००-	निराला :	परिमल :	१८४
१०१-	निराला :	परिमल :	१८६
१०२-	निराला :	गीतगुंज :	३१

			पृ०
१०३-	निराला :	गीतगुंज	४७
१०४-	निराला :	गीतगुंज	५०
१०५-	निराला :	गीतगुंज	३०
१०६-	निराला :	गीतिका :	१६
१०७-	निराला :	गीतिका :	७६
१०८-	निराला :	सांध्य काकली :	८४
१०९-	निराला :	गीतिका :	७३
११०-	निराला :	गीतगुंज :	२५
१११-	निराला :	गीतगुंज :	२६
११२-	निराला :	गीतगुंज :	३२
११३-	निराला :	गीतगुंज :	३३
११४-	निराला :	गीतगुंज :	४०
११५-	निराला :	गीतगुंज :	४९
११६-	निराला :	सांध्य काकली :	५१
११७-	निराला :	सांध्य काकली :	६७
११८-	निराला :	सांध्य काकली :	८१
११९-	निराला :	गीतिका :	९९
१२०-	निराला :	गीतिका :	११
१२१-	निराला :	गीतिका :	१३
१२२-	निराला :	गीतिका :	३१
१२३-	निराला :	गीतिका :	३३
१२४-	निराला :	गीतिका :	३५
१२५-	निराला :	गीतिका :	४१
१२६-	निराला :	सांध्य काकली :	६८

			पृ०
१२७-	निराला :	परिमल :	६४
१२८-	निराला :	परिमल :	६६
१२९-	निराला :	अर्चना :	८४
१३०-	निराला :	अर्चना :	३९
१३१-	निराला :	अर्चना :	२६
१३२-	निराला :	गीतिका :	१०४
१३३-	निराला :	गीतिगुंज :	४४
१३४	निराला :	गीतिका :	१३
१३५-	निराला :	गीतिका :	९०
१३६-	निराला :	गीतिका :	९१
१३७-	निराला :	गीतिका :	८
१३८-	निराला :	गीतिका :	४०
१३९-	निराला :	गीतिका :	९
१४०-	निराला :	गीतिका :	१०१
१४१-	निराला :	गीतिका :	१८
१४२-	निराला :	गीतिका :	५२
१४३-	निराला :	गीतिका की भूमिका	१३-१४
१४४-	निराला :	गीतिका :	५३
१४५-	निराला :	गीतिका :	४७
१४६-	निराला :	गीतिका :	४
१४७-	निराला :	अनामिका :	१
१४८-	निराला :	अनामिका :	३४
१४९-	निराला :	अनामिका :	४२
१५०-	निराला :	गीतिका :	७

			पृ०
१५१-	निराला :	गीतिका :	६
१५२-	निराला :	गीतिका :	२३
१५३-	निराला :	गीतिका :	२५
१५४-	निराला :	गीतिका :	६२
१५५-	निराला :	गीतिका :	६३
१५६-	निराला :	गीतिका :	६७
१५७-	निराला :	गीतिका :	४६
१५८-	निराला :	आराधना :	१०
१५९-	निराला :	सांध्य काकली	३८
१६०-	निराला :	सांध्य काकली :	३०
१६१-	निराला :	सांध्य काकली :	४३
१६२-	निराला :	गीतिका :	५६
१६३-	निराला :	आराधना :	२०
१६४-	निराला :	आराधना :	२२
१६५-	निराला :	आराधना :	२
१६६-	निराला :	आराधना :	६
१६७-	निराला:	आराधना :	७
१६८-	निराला :	आराधना :	२६
१६९-	निराला :	आराधना :	८६
१७०-	निराला :	आराधना :	१५
१७१-	निराला :	गीतिका :	४५
१७२-	निराला :	गीतिका :	१०
१७३-	निराला :	गीतिका :	२३
१७४-	निराला :	सांध्य काकली :	२३
१७५-	निराला :	सांध्य काकली :	२७

			पृ०
१७६-	निराला :	सांध्य काकली :	४१
१७७-	निराला :	सांध्य काकली :	४४
१७८-	निराला :	बेला :	८७
१७९-	निराला :	अर्चना :	१७
१८०-	निराला :	अर्चना :	८३
१८१-	निराला :	अर्चना :	७८
१८२-	निराला :	अर्चना :	५३
१८३-	निराला :	आराधना :	२१
१८४-	निराला :	आराधना :	२८
१८५-	निराला :	अर्चना :	२२
१८६-	निराला :	अर्चना :	११४
१८७-	निराला :	बेला :	३१
१८८-	निराला :	गीतिका :	९०
१८९-	निराला :	गीतिका :	९५
१९०-	निराला :	गीतिका :	९६
१९१-	निराला :	गीतिका :	६०
१९२-	निराला :	गीतिका :	४६
१९३-	निराला :	आराधना :	८५